गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 341
दि. 14.04.2026,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

एसआईआर विवाद पर सुप्रीम कोर्ट का बड़ा फैसला: अपील लंबित रहने तक मतदाता सूची से हटे लोग नहीं कर पाएंगे मतदान, बंगाल चुनाव से पहले बढ़ी राजनीतिक हलचल

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल में आगामी विधानसभा चुनाव से पहले मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर जारी विवाद पर सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को एक अहम और दूरगामी प्रभाव वाला फैसला सुनाया है। इस निर्णय ने न केवल राज्य की चुनावी राजनीति को नई दिशा दी है, बल्कि लाखों मतदाताओं की स्थिति को भी तत्काल प्रभावित कर दिया है।

सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि जिन नागरिकों के नाम मतदाता सूची से हटाए गए हैं और जिनकी अपीलें अभी लंबित हैं, उन्हें तब तक मतदान की अनुमति नहीं दी जा सकती जब तक उनकी अपीलों पर अंतिम निर्णय नहीं हो जाता। कोर्ट ने कहा कि कानूनी प्रक्रिया के अधीन रहते हुए ऐसे व्यक्तियों को मतदान का अधिकार देना चुनावी व्यवस्था को असंतुलित कर सकता है और इससे गंभीर प्रशासनिक जटिलताएं उत्पन्न होंगी।

मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्य बागची की पीठ इस मामले की सुनवाई कर रही थी। सुनवाई के दौरान सीजेआई सूर्यकांत ने कहा कि यदि ऐसे व्यक्तियों को मतदान की अनुमति दी जाती है, तो यह पूरी चुनावी प्रक्रिया की शुचिता और निष्पक्षता को प्रभावित कर सकता है। अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि मतदाता अधिकारों की बहाली केवल वैधानिक प्रक्रिया पूरी होने के बाद ही संभव होगी।

यह मामला पश्चिम बंगाल में चल रहे एसआईआर विवाद से जुड़ा है, जिसमें मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण के दौरान बड़ी संख्या में नाम हटाए जाने को लेकर राजनीतिक और कानूनी विवाद खड़ा हो गया है। राज्य में इस प्रक्रिया के खिलाफ लाखों लोगों ने अपील दायर की है, जिससे स्थिति और अधिक जटिल हो गई है। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, अब तक लगभग 34 लाख से अधिक अपीलें दायर की जा चुकी हैं। यह संख्या इस विवाद की व्यापकता और संवेदनशीलता को

दर्शाती है। जिन लोगों के नाम सूची से हटाए गए हैं, वे लगातार यह दावा कर रहे हैं कि उनके मताधिकार को गलत तरीके से प्रभावित किया गया है, जबकि प्रशासन का कहना है कि यह प्रक्रिया नियमों के अनुसार की गई है। सुप्रीम कोर्ट ने अपने निर्णय में यह भी कहा कि यदि अपील स्वीकार हो जाती है और नाम पुनः मतदाता सूची में शामिल किया जाता है, तभी संबंधित व्यक्ति को मतदान का अधिकार मिलेगा। अदालत ने यह स्पष्ट किया कि अपीलीय प्रक्रिया को अनावश्यक दबाव से बचाने के लिए यह व्यवस्था आवश्यक है, ताकि न्यायिक प्रणाली निष्पक्ष और सुचारु रूप से कार्य कर सके। सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ताओं की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता कल्याण बंदोपाध्याय ने दलील दी कि पश्चिम बंगाल के नागरिकों के बीच इस प्रक्रिया को लेकर भ्रम और असंतोष की स्थिति है। उन्होंने कहा कि कई लोगों को यह लग रहा है कि उनकी अपीलों का निपटारा हो चुका है, जबकि वास्तविकता में ऐसा नहीं है। उन्होंने अदालत से यह भी आग्रह किया कि मतदाता अधिकारों से जुड़े मामलों में पारदर्शिता और त्वरित समाधान सुनिश्चित किया जाए।

इस मामले की सुनवाई के दौरान राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने भी एक महत्वपूर्ण रिपोर्ट अदालत के समक्ष प्रस्तुत की। यह रिपोर्ट मालदा जिले में हुई उस घटना से संबंधित थी, जिसमें वोटर लिस्ट से नाम हटाए जाने के विरोध में प्रदर्शन के दौरान कुछ न्यायिक अधिकारियों को घेर लिया गया था। इस घटना ने राज्य में कानून-व्यवस्था और प्रशासनिक व्यवस्था को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए थे। कोर्ट ने एनआईए से यह भी पूछा कि जिन लोगों को इस मामले में गिरफ्तार किया गया है, क्या उनके किसी राजनीतिक दल से संबंध हैं या नहीं। यह सवाल इस बात की ओर संकेत करता है कि अदालत इस पूरे प्रकरण को केवल प्रशासनिक नहीं, बल्कि संभावित राजनीतिक प्रभावों के दृष्टिकोण से भी देख रही है।

इस फैसले के बाद पश्चिम बंगाल की राजनीति में हलचल और तेज हो गई है। विभिन्न राजनीतिक दल इस निर्णय को अपने-अपने नजरिए से देख रहे हैं। जहां एक ओर इसे चुनावी प्रक्रिया की पारदर्शिता बनाए रखने के लिए जरूरी कदम बताया जा रहा है, वहीं दूसरी ओर इसे मतदाता अधिकारों पर संभावित प्रभाव के रूप में भी देखा जा रहा है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इस फैसले का सीधा असर राज्य के चुनावी समीकरणों पर पड़ सकता है, क्योंकि लाखों लोगों की मतदाता स्थिति अभी अनिश्चित बनी हुई है। चुनाव से ठीक पहले आया यह निर्णय न केवल प्रशासन के लिए चुनौती है, बल्कि राजनीतिक दलों के लिए भी रणनीतिक पुनर्विचार का विषय बन गया है।

चुनाव आयोग और राज्य प्रशासन अब इस आदेश के अनुपालन को लेकर आगे की प्रक्रिया तय करने में जुटे हैं। अधिकारियों का कहना है कि अदालत के निर्देशों का पूरी तरह पालन किया जाएगा और मतदाता सूची से जुड़े सभी मामलों का निस्तारण कानूनी प्रक्रिया के अनुसार ही किया जाएगा।

कुल मिलाकर, सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला पश्चिम बंगाल की चुनावी राजनीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में देखा जा रहा है। यह न केवल मतदाता सूची की शुचिता और पारदर्शिता को लेकर एक स्पष्ट संदेश देता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया में कानूनी संतुलन और नियमों की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है।

कमजोर मानसून की आशंका से बढ़ी चिंता, 8% कम बारिश का अनुमान और अर्थव्यवस्था पर असर के संकेत

नई दिल्ली। इस वर्ष देश के सामने मौसम और अर्थव्यवस्था—दोनों मोर्चों पर एक साथ चुनौती खड़ी होती नजर आ रही है। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के ताजा पूर्वानुमान के अनुसार जून से सितंबर के बीच होने वाली दक्षिण-पश्चिम मानसूनी बारिश सामान्य से लगभग 8 प्रतिशत कम रह सकती है। अनुमान के मुताबिक इस बार कुल वर्षा सामान्य के 92 प्रतिशत यानी करीब 800 मिमी रहने की संभावना है, जबकि दीर्घकालिक औसत 870 मिमी के आसपास माना जाता है। आईएमडी के महानिदेशक डॉ. एम. महापात्र ने स्पष्ट किया है कि अनुमान में 5 प्रतिशत तक का अंतर संभव है, लेकिन समग्र संकेत यही हैं कि इस साल मानसून अपेक्षाकृत कमजोर रह सकता है।

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में मानसून केवल एक मौसमी घटना नहीं, बल्कि आर्थिक गतिविधियों की धुरी होता है। देश की करीब आधी से अधिक खेती आज भी वर्षा पर निर्भर है। ऐसे में यदि बारिश सामान्य से कम होती है, तो इसका सीधा असर फसल उत्पादन, ग्रामीण आय, खाद्य कीमतों और समग्र आर्थिक विकास पर पड़ता है। विशेष रूप से धान, दालें, तिलहन और गन्ना जैसी फसलें मानसूनी बारिश पर अत्यधिक निर्भर होती हैं। कम वर्षा का अर्थ है सिंचाई पर अतिरिक्त दबाव, भूजल स्तर में गिरावट और उत्पादन लागत में वृद्धि।

इस बार मानसून के कमजोर रहने की सबसे बड़ी वजह प्रशांत महासागर में बनने वाली जलवायु घटना El Nio यानी अल नीनो को माना जा रहा है। मौसम वैज्ञानिकों के अनुसार मानसून के दौरान अल नीनो के विकसित होने की आशंका बढ़ गई है। ऐतिहासिक आंकड़ों पर नजर डालें तो 1951 से 2025 के बीच 16 ऐसे वर्ष रहे हैं जब मानसून के दौरान अल नीनो सक्रिय हुआ। इनमें से 8 वर्षों में वर्षा सामान्य से कम रही, जबकि शेष 8 वर्षों में सामान्य या उससे अधिक बारिश दर्ज की गई। इसका अर्थ यह है कि अल नीनो का प्रभाव हर बार एक जैसा नहीं होता, लेकिन इसकी मौजूदगी मानसून को अस्थिर जरूर बना देती है। विशेषज्ञ बताते हैं कि अल नीनो की स्थिति में प्रशांत महासागर के मध्य और पूर्वी हिस्से का तापमान सामान्य से अधिक हो जाता है, जिससे वैश्विक वायुमंडलीय परिसंचरण प्रभावित होता है। इसका असर भारतीय मानसून की नमी और उसकी तीव्रता पर पड़ता है। कई बार यह स्थिति मानसून की प्रगति को धीमा कर देती है या वर्षा के वितरण को असंतुलित बना देती है। परिणामस्वरूप कुछ क्षेत्रों में सूखे जैसी स्थिति बनती है, जबकि कुछ स्थानों पर अचानक भारी बारिश हो सकती है।

इतिहास गवाह है कि 1965, 1972, 1987, 2002, 2009 और 2015 जैसे वर्षों में अल नीनो के प्रभाव से देश को कमजोर मानसून का सामना करना पड़ा था। इन वर्षों में कृषि उत्पादन पर नकारात्मक असर देखने को मिला और कई राज्यों में सूखे की स्थिति उत्पन्न हुई। वहीं 1997 और 2023 जैसे कुछ वर्षों में अल नीनो के बावजूद सामान्य या बेहतर वर्षा भी दर्ज की गई, जो इस घटना की जटिलता को दर्शाता है।

कमजोर मानसून की आशंका का सबसे बड़ा प्रभाव कृषि क्षेत्र पर पड़ सकता है। यदि समय पर और पर्याप्त वर्षा नहीं होती, तो बुआई प्रभावित होती है। खासकर खरीफ फसलों की बुआई मानसून की शुरुआत पर निर्भर करती है। यदि मानसून देर से आता है या कमजोर रहता है, तो किसान वैकल्पिक फसलों की ओर रुख कर सकते हैं, जिससे उत्पादन पैटर्न बदल सकता है। इसका असर बाजार में आपूर्ति पर पड़ेगा और खाद्य महंगाई बढ़ने की संभावना भी बन सकती है। इसके अलावा ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर भी इसका व्यापक प्रभाव पड़ता है। कम फसल उत्पादन का मतलब है किसानों की आय में कमी, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में खपत घट सकती है। इसका असर उद्योगों और सेवा क्षेत्र तक भी पहुंचता है, क्योंकि भारत की अर्थव्यवस्था में ग्रामीण मांग की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यही कारण है कि मानसून के पूर्वानुमान को आर्थिक दृष्टि से भी बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है।

सरकार और संबंधित एजेंसियां इस संभावित स्थिति से निपटने के लिए तैयारियों में जुट गई हैं। जल प्रबंधन, सिंचाई परियोजनाओं और वैकल्पिक फसल योजनाओं पर जोर दिया जा रहा है। किसानों को सूखा-रोधी बीजों के उपयोग और फसल विविधीकरण की सलाह दी जा रही है। इसके साथ ही जल संरक्षण और वर्षा जल संचयन जैसे उपायों को भी बढ़ावा दिया जा रहा है, ताकि कम बारिश की स्थिति में नुकसान को कम किया जा सके। ऊर्जा क्षेत्र पर भी मानसून का प्रभाव पड़ता है। जलाशयों में पानी की कमी से जलविद्युत उत्पादन प्रभावित हो सकता है, जिससे बिजली की उपलब्धता पर असर पड़ सकता है। इसके अलावा पेयजल संकट भी कई राज्यों में गहरा सकता है, खासकर उन क्षेत्रों में जहां पहले से ही जल संसाधनों पर दबाव है। हालांकि विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि मानसून का अंतिम प्रदर्शन कई कारकों पर निर्भर करता है और पूर्वानुमान समय के साथ बदल भी सकते हैं। इसलिए अभी से पूरी तरह नकारात्मक निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा। यदि मानसून के दौरान परिस्थितियां अनुकूल रहीं, तो वर्षा की स्थिति में सुधार भी संभव है।

बंद दरवाजों वाली नई लोकल से बदलेगा सफर का अनुभव, सुरक्षा और सुविधा का नया अध्याय

मुंबई। देश की जीवनरेखा मानी जाने वाली उपनगरीय रेल व्यवस्था को और सुरक्षित, आधुनिक और यात्री-अनुकूल बनाने की दिशा में मध्य रेलवे ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इसी क्रम में देश की पहली बंद दरवाजों वाली नॉन-एसी लोकल ट्रेन कुर्ला कारशेड पहुंच गई है, जिसने मुंबई की भीड़भाड़ वाली रेल व्यवस्था में एक नई उम्मीद जगा दी है। यह पहल न केवल यात्रियों की सुरक्षा को मजबूत करने की दिशा में एक बड़ा बदलाव है, बल्कि यह इस बात का भी संकेत है कि भारतीय रेल अब तकनीकी नवाचार और यात्रियों की जरूरतों के बीच बेहतर संतुलन बनाने की ओर अग्रसर है। मुंबई की लोकल ट्रेनें वर्षों से शहर की धड़कन रही हैं, लेकिन भीड़, खुले दरवाजों और दुर्घटनाओं की आशंकाओं ने हमेशा सुरक्षा को लेकर चिंता पैदा की है। ऐसे में बंद दरवाजों वाली यह नई नॉन-एसी लोकल ट्रेन एक क्रांतिकारी प्रयोग के रूप में देखी जा रही है। इस ट्रेन की सबसे खास विशेषता इसके ऑटोमैटिक डोर सिस्टम हैं, जो ट्रेन के चलने के दौरान पूरी तरह बंद रहेंगे और केवल स्टेशन पर रुकने के बाद ही खुलेंगे। इससे यात्रियों के गिरने, धक्का लगने या दुर्घटनाओं की संभावना काफी हद तक कम हो जाएगी।

हालांकि बंद डिब्बों के साथ आमतौर पर घुटन और हवा के अभाव की समस्या सामने आती है, लेकिन इस नई लोकल ट्रेन के डिजाइन में इस चुनौती का भी समाधान किया गया है। कोच की खिड़कियों को पहले से अधिक बड़ा बनाया गया है, जिससे प्राकृतिक हवा का प्रवाह बेहतर हो सके। इसके अलावा दरवाजों में विशेष हवादार जाली लगाई गई है, जो चलते समय बाहर की हवा को अंदर आने देती है। कोच के भीतर लगाए गए "ब्लॉकर" सिस्टम से हवा के प्रवाह को संतुलित रखा जाता है, जिससे यात्रियों को बिना एसी के भी अपेक्षाकृत आरामदायक वातावरण मिल सके।

यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए ट्रेन के भीतर सीटिंग और स्पेस मैनेजमेंट में भी महत्वपूर्ण बदलाव किए गए हैं। सीटों के बीच पहले की तुलना में अधिक दूरी रखी गई है, ताकि यात्रियों को बैठने में सहजता हो। वहीं, भीड़भाड़ के समय खड़े होकर सफर करने वाले यात्रियों के लिए भी पर्याप्त जगह सुनिश्चित की गई है। यह बदलाव खासतौर पर मुंबई जैसे शहर के लिए बेहद जरूरी है, जहां पीक आवर्स के दौरान लोकल ट्रेनों में भारी भीड़ उमड़ती है।

तकनीकी दृष्टि से भी यह लोकल ट्रेन काफी उन्नत मानी जा रही है। कोच के बाहर लगाए गए स्मार्ट इंडिकेटर यात्रियों को यह जानकारी देंगे कि दरवाजा किस दिशा में खुलेगा। जैसे ही ट्रेन स्टेशन पर पहुंचेगी, जिस ओर दरवाजा खुलेगा, उस दिशा में लाल लाइट जलकर संकेत देगी। इससे यात्रियों को पहले से ही तैयार रहने में मदद मिलेगी और चढ़ने-उतरने की प्रक्रिया अधिक व्यवस्थित हो सकेगी।

लगेज रखने की व्यवस्था में भी बदलाव किया गया है। इस नई लोकल में रैक को थोड़ा छोटा बनाया गया है, ताकि यात्रियों के लिए अधिक जगह उपलब्ध हो सके। यह कदम इस बात को ध्यान में रखकर उठाया गया है कि अधिकांश यात्री छोटे बैग या सीमित सामान के साथ यात्रा करते हैं, जबकि अधिक स्थान खड़े होने या चलने के लिए जरूरी होता है। सुरक्षा के क्षेत्र में यह ट्रेन कई आधुनिक सुविधाओं से लैस है। प्रत्येक कोच में सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं, जिससे निगरानी आसान होगी और किसी भी संदिग्ध गतिविधि पर तुरंत नजर रखी जा सकेगी। इसके अलावा इमरजेंसी टॉक-बैक सिस्टम भी उपलब्ध कराया गया है, जिसके जरिए यात्री किसी आपात स्थिति में सीधे गार्ड या ड्राइवर से संपर्क कर सकते हैं। यह सुविधा खासतौर पर महिलाओं और वरिष्ठ नागरिकों के लिए बेहद उपयोगी साबित हो सकती है।

एक और महत्वपूर्ण पहल के तहत प्रत्येक कोच में सीपीआर (हृदय-रक्षा) से संबंधित जानकारी भी प्रदर्शित की गई है। यदि यात्रा के दौरान किसी यात्री को अचानक स्वास्थ्य समस्या, जैसे दिल का दौरा पड़ता है, तो अन्य यात्री प्राथमिक सहायता प्रदान कर सकें—इसके लिए जागरूकता सामग्री लगाई गई है। यह पहल न केवल तकनीकी सुधार का उदाहरण है, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी की भावना को भी दर्शाती है।

मध्य रेलवे के सीपीआरओ डॉ. स्वप्निल नीला ने इस नई पहल को लेकर उम्मीद जताई है कि यदि यह प्रयोग सफल रहता है, तो भविष्य में ऐसी और रेक्स को मुंबई के उपनगरीय नेटवर्क में शामिल किया जाएगा। इसका मतलब है कि आने वाले समय में मुंबई की लोकल ट्रेनें और अधिक सुरक्षित, व्यवस्थित और आधुनिक रूप में नजर आ सकती हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि यह पहल भारतीय रेल के उस व्यापक दृष्टिकोण का हिस्सा है, जिसमें यात्रियों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जा रही है। पिछले कुछ वर्षों में रेलवे ने कई तकनीकी सुधार किए हैं, लेकिन यह कदम सीधे तौर पर रोजाना लाखों यात्रियों की जिंदगी से जुड़ा हुआ है। अगर यह मॉडल सफल होता है, तो इसे देश के अन्य महानगरों में भी लागू किया जा सकता है।

ओवैसी ने मुस्लिमों के मुद्दों पर उठाए सवाल, बंगाल में राजनीतिक माहौल गरमाया

मुर्शिदाबाद। पश्चिम बंगाल की राजनीति में एक बार फिर अल्पसंख्यक मुद्दों को लेकर बहस तेज हो गई है। असदुद्दीन ओवैसी ने रघुनाथगंज विधानसभा क्षेत्र में आयोजित एक जनसभा को संबोधित करते हुए राज्य सरकार और राष्ट्रीय राजनीति पर तीखे सवाल उठाए। उन्होंने कहा कि मुस्लिम अल्पसंख्यकों के साथ लगातार अन्याय हुआ है और केवल "सेक्युलरिज्म" के नाम पर वादे किए जाते रहे हैं, जबकि जमीन पर हालात अलग हैं।

अपने संबोधन में ओवैसी ने ऐतिहासिक संदर्भों का उल्लेख करते हुए कहा कि 1960 के दशक में, जब देश के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू थे, उस दौरान बड़ी संख्या में मुस्लिमों को नोटिस दिए जाने और कथित रूप से उन्हें विस्थापन जैसी स्थितियों का सामना करना पड़ा। उन्होंने दावा किया कि लगभग 40 हजार मुस्लिमों से जुड़े ऐसे मामले सामने आए थे, और उन्होंने सवाल उठाया कि क्या यह इतिहास का हिस्सा नहीं है जिसे स्वीकार किया जाना चाहिए।

ओवैसी ने अपने भाषण में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि विभिन्न राजनीतिक दलों ने समय-समय पर अलग-अलग रुख अपनाया है और सत्ता की राजनीति में कई बार विचारधारा बदलती रही है। ओवैसी ने आरोप लगाया कि मुस्लिम समुदाय को अक्सर चुनावी समीकरणों के लिए इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन उनके वास्तविक मुद्दों पर ठोस कदम नहीं उठाए जाते।

उन्होंने 2002 के गुजरात दंगों का जिक्र करते हुए कहा कि उस समय बड़ी संख्या में लोग राहत शिविरों में रहने को मजबूर हुए थे, लेकिन उस दौर में राजनीतिक नेतृत्व की भूमिका पर भी सवाल उठते रहे हैं। ओवैसी ने पूछा कि उस समय प्रभावित लोगों के लिए क्या पर्याप्त कदम उठाए गए थे।

अपने संबोधन में उन्होंने कुछ प्रमुख मामलों का भी उल्लेख किया, जिनमें इशरत जहां, बिलकिस बानो और जाकिया जाफरी के नाम शामिल थे। ओवैसी ने इन मामलों का उल्लेख करते हुए सवाल उठाया कि क्या इन महिलाओं और पीड़ितों के साथ न्याय हुआ है और क्या उन्हें वह सम्मान और सुरक्षा मिली, जिसके वे हकदार थे।

सभा में उन्होंने यह भी कहा कि कई राजनीतिक दल मुस्लिम समुदाय से वोट तो मांगते हैं, लेकिन उनके अधिकारों, सुरक्षा और सामाजिक-आर्थिक स्थिति को लेकर गंभीरता से काम नहीं करते। उन्होंने आरोप लगाया कि समुदाय को केवल चुनावी रणनीति के रूप में देखा जाता है, न कि एक जिम्मेदार नागरिक समूह के रूप में।

ओवैसी के इस भाषण के बाद बंगाल की राजनीतिक हलचल और तेज हो गई है। उनके बयानों को लेकर विभिन्न राजनीतिक दलों की ओर से प्रतिक्रियाएं आने की संभावना है। जहां समर्थक इसे अल्पसंख्यक मुद्दों की आवाज बता रहे हैं, वहीं विरोधी इसे राजनीतिक ध्रुवीकरण का प्रयास मान रहे हैं।

बुलडोजर की राजनीति में विश्वास नहीं: ममता बनर्जी का योगी आदित्यनाथ पर तीखा हमला, चुनाव आयोग पर भी लगाए आरोप

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर राजनीतिक माहौल लगातार गरमाता जा रहा है। सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस और विपक्षी दलों के बीच आरोप-प्रत्यारोप का दौर तेज हो गया है और चुनावी रैलियों में तीखी बयानबाजी देखने को मिल रही है।

इसी क्रम में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बीरभूम जिले के सूरी में आयोजित एक चुनावी सभा को संबोधित करते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर अप्रत्यक्ष रूप से निशाना साधा। उन्होंने कहा कि वह "बुलडोजर राजनीति" में विश्वास नहीं करतीं और उनका दृष्टिकोण नफरत के बजाय प्रेम और समावेशिता पर आधारित है।

अपने भाषण में ममता बनर्जी ने कहा कि कुछ नेता पश्चिम बंगाल में "उत्तर प्रदेश मॉडल" लागू करने की बात कर रहे हैं, जो उनके अनुसार राज्य की सामाजिक संरचना और लोकतांत्रिक मूल्यों के विपरीत है। उन्होंने स्पष्ट किया कि पश्चिम बंगाल की राजनीति किसी भी प्रकार की हिंसा, भय या दमन पर आधारित नहीं हो सकती।

ममता बनर्जी का यह बयान ऐसे समय आया है जब एक दिन पहले ही उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक जनसभा में पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस के शासन को खत्म करने की बात करते हुए "यूपी मॉडल" का उल्लेख किया था। इसी बयान के जवाब में ममता बनर्जी ने अपनी चुनावी रैली में कड़ा रुख अपनाया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राजनीति का उद्देश्य जनता की सेवा और विकास होना चाहिए, न कि डर या दबाव के जरिए शासन स्थापित करना। उन्होंने कहा कि वह ऐसी किसी भी राजनीति का समर्थन नहीं करतीं जो लोगों के बीच विभाजन पैदा करे या प्रशासन को कठोरता के माध्यम से चलाए।

रैली के दौरान ममता बनर्जी ने चुनाव आयोग पर भी गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि नामांकन प्रक्रिया के दौरान उन्हें चार घंटे तक अनावश्यक रूप से परेशान किया गया। उनके अनुसार यह अनुभव लोकतांत्रिक प्रक्रिया की निष्पक्षता पर सवाल खड़े करता है। उन्होंने यह भी कहा कि वह इस पूरे घटनाक्रम को हल्के में नहीं लेंगी और इसे उचित मंच पर उठाया जाएगा।

मुख्यमंत्री के इन आरोपों के बाद राजनीतिक हलकों में नई बहस शुरू हो गई है। विपक्षी दलों ने जहां इसे चुनावी बयानबाजी बताया है, वहीं तृणमूल कांग्रेस समर्थकों का कहना है कि चुनावी प्रक्रिया में सभी दलों के साथ समान व्यवहार होना चाहिए।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि पश्चिम बंगाल चुनाव में इस तरह के बयान चुनावी ध्रुवीकरण को और बढ़ा सकते हैं। एक ओर जहां विकास और शासन मॉडल की चर्चा हो रही है, वहीं दूसरी ओर राजनीतिक आक्रामकता चुनावी माहौल को और तनावपूर्ण बना रही है।

फिलहाल राज्य में चुनावी प्रचार तेज हो चुका है और सभी प्रमुख दल अपनी-अपनी रणनीति के साथ मतदाताओं को साधने में जुटे हुए हैं। आने वाले दिनों में इस तरह के और बयान राज्य की राजनीति को और अधिक गर्म कर सकते हैं।

संपादकीय

थमी सुरों की आशा

भारतीय संगीत जगत में जब भी पार्श्व गायन के स्वर्णिम युग की चर्चा होती है, तब कुछ नाम अपने आप सम्मान और श्रद्धा के साथ सामने आ जाते हैं। इन्हीं में एक अत्यंत चमकदार, प्रयोगशील और बहुआयामी नाम है आशा भोसले का, जिनकी आवाज ने न केवल फिल्मों को जीवंत बनाया, बल्कि भारतीय संगीत की परिभाषा को भी विस्तार दिया। उनका जाना केवल एक कलाकार का विदा होना नहीं, बल्कि एक ऐसी धारा का मौन हो जाना है जिसने दशकों तक संगीत को नई दिशा दी। 1933 में जन्मी आशा भोसले ने बहुत छोटी उम्र में संगीत की दुनिया में कदम रखा था, लेकिन उनकी यात्रा कभी भी आसान नहीं रही। शुरुआत में उन्हें वह पहचान नहीं मिली, जिसकी वे हकदार थीं। उस समय भारतीय फिल्म संगीत में उनकी बड़ी बहन लता मंगेशकर का दबदबा स्थापित हो चुका था, और उसी छाया के भीतर अपनी अलग पहचान बनाना किसी भी कलाकार के लिए एक कठिन चुनौती थी। लेकिन आशा भोसले ने इस चुनौती को अपनी ताकत बनाया। उन्होंने खुद को सीमित नहीं रखा, बल्कि संगीत की हर शैली को अपनाकर यह साबित किया कि उनकी आवाज किसी एक ढांचे में कैद नहीं की जा सकती। उनकी खासियत यह थी कि वे जोखिम लेने से कभी नहीं डरती थीं। जहां एक ओर वे शास्त्रीय और भावनात्मक गीतों में गहराई पैदा करती थीं, वहीं दूसरी ओर उन्होंने आधुनिक, पश्चिमी प्रभाव वाले गीतों को भी उतनी ही सहजता से निभाया। पॉप, जैज़, कव्वाली, ग़ज़ल और लोक संगीत—हर शैली में उनकी उपस्थिति ने यह दिखाया कि संगीत केवल परंपरा नहीं, बल्कि निरंतर विकास की प्रक्रिया है। यही कारण है कि उनकी आवाज हर दौर के श्रोताओं को आकर्षित करती रही, चाहे वह पुरानी पीढ़ी हो या नई। आशा भोसले की आवाज में एक विशेष प्रकार की ऊर्जा थी। वह ऊर्जा केवल तकनीकी कौशल से नहीं आती, बल्कि जीवन के अनुभवों, संघर्षों और संवेदनाओं से जन्म लेती है। उनके गीतों में चंचलता भी थी और गंभीरता भी, प्रेम भी था और विरह भी, और सबसे बढ़कर जीवन के प्रति एक गहरा उत्साह था। यही संतुलन उनकी सबसे बड़ी ताकत बना।

संगीत के क्षेत्र में उनके योगदान को समझने के लिए यह देखना जरूरी है कि उन्होंने कितने व्यापक स्तर पर काम किया। उन्होंने हिंदी फिल्मों के साथ-साथ मराठी, बंगाली, गुजराती, पंजाबी और कई अन्य भाषाओं में भी गीत गाए। यह बहुभाषीय क्षमता उन्हें अपने समकालीन कलाकारों से अलग बनाती है। उन्होंने यह साबित किया कि एक सच्चा कलाकार सीमाओं में नहीं बंधता, बल्कि सीमाओं को तोड़कर आगे बढ़ता है। उनके करियर में एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब संगीतकार ओ.पी. नैयर के साथ उनकी जोड़ी बनी। इस सहयोग ने उन्हें नई पहचान दी और उनके करियर को नई ऊंचाईयों पर पहुंचाया। इस दौर में बने गीतों ने न केवल लोकप्रियता हासिल की, बल्कि संगीत इतिहास में अपनी स्थायी जगह भी बनाई। उनकी आवाज और संगीत की तालमेल ने एक ऐसा जादू रचा, जो आज भी लोगों के दिलों में जीवित है। हालांकि, उनकी निजी जिंदगी आसान नहीं थी। उन्होंने कई व्यक्तिगत और पारिवारिक संघर्षों का सामना किया, जिनका प्रभाव उनके जीवन और करियर दोनों पर पड़ा। लेकिन इन कठिनाइयों ने उन्हें कमजोर नहीं किया, बल्कि और मजबूत बनाया। उन्होंने हर चुनौती को स्वीकार किया और उसे अपनी ऊर्जा में बदल दिया। यही उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता थी—संघर्ष को अवसर में बदलने की क्षमता। उनके समकालीन महान गायकों जैसे मोहम्मद रफी, मुकेश और किशोर कुमार के साथ उनका संगीत भारतीय फिल्म उद्योग के स्वर्णिम युग का आधार बना। यह वह दौर था जब संगीत केवल मनोरंजन नहीं था, बल्कि भावनाओं और कहानियों को व्यक्त करने का सबसे प्रभावी माध्यम था। आशा भोसले ने इस युग में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई और इसे और समृद्ध किया। उनकी आवाज की सबसे बड़ी खूबी यह थी कि वह समय के साथ पुरानी नहीं हुई। जैसे-जैसे संगीत का स्वरूप बदलता गया, आशा भोसले भी खुद को नए प्रयोगों के लिए तैयार करती रहीं। यही कारण है कि वे कई दशकों तक सक्रिय रहीं और हर नई पीढ़ी के साथ जुड़ी रहीं। उनकी आवाज में एक ऐसी ताजगी थी, जो उम्र के साथ भी कम नहीं हुई। यदि उनके योगदान को व्यापक दृष्टि से देखा जाए, तो यह केवल गीतों की संख्या या लोकप्रियता तक सीमित नहीं है। उन्होंने भारतीय संगीत में एक नई सोच को जन्म दिया—एक ऐसी सोच जो प्रयोग, विविधता और स्वतंत्रता को महत्व देती है।

पाकिस्तान को लेकर भारतीय रवैये के प्रश्न

> “ पश्चिम एशिया में युद्ध-विराम के बाद इस्लामाबाद में अमेरिका और ईरान के बीच शांति वार्ता हुई। जहां पाकिस्तान अपनी हैसियत से ज्यादा भूमिका निभा रहा है, परंतु भारत अपनी क्षमता से कम क्यों रहा है? जबकि इसका मुख्य प्रतिद्वंद्वी चीन, ईरान युद्ध और शांति वार्ताओं में पाक का उपयोग कर खुद को बतौर दुनिया की सबसे बड़ी ताकत बनाने की कोशिश में है।

पुराने 'बुरे' वक्त में, जब भारत और पाकिस्तान के आम नागरिकों को इजाज़त थी कि चाहें तो लंच लाहौर में, डिनर पटियाला में, चाहें तो कराची में किसी शादी समारोह में शिरकत करें या फिर कादियां में किसी की मैयत में भाग लें। आप अक्सर ऐसी छोटी-मोटी बातों से सुना करते थे- लंदन स्कूल ऑफ़ इकोनॉमिक्स से पढ़ा वह आतंकवादी उमर शेख जिसे आईसी 814 के अपहृत यात्रियों के बदले रिहा किया गया था, वह इस्लामाबाद में किताबों की मशहूर दुकान चला रहा है-कि पाकिस्तानियों को पाकिस्तान और चीन के बीच गहरे, रणनीतिक संबंधों पर खूब नाज़ है। वे कहते हैं : दोनों देशों का 'सदाबहार रिश्ता' हिमालय से ऊंचा, समुद्र से गहरा और शहद से मीठा है।

आज की उलझी सी दुनिया में, यह बात 'धुरंधर-3' (सीक्वल) से उठाई गई पंक्ति लग सकती है - मुगालता न रहे कि आदित्य धर पहले से पाकिस्तान के प्रति भारत के जुनून के बारे में विस्तार से लिख रहे होंगे; इस सच्चाई के बावजूद कि अपने इस पश्चिमी पड़ोसी के साथ हमारे किसी किस्म के आधिकारिक संबंध नहीं। यह तथ्य है कि आम लोगों का परस्पर संवाद अक्सर विदेश मामलों की तकनीकी शब्दावली को उसी शब्दावली से कहीं बेहतर समझा सकता है।

तो जहां तक, इस्लामाबाद में , जो 39 दिनों तक चली लड़ाई के बाद अमेरिका और ईरान के बीच प्रत्यक्ष शांति वार्ता का स्थल रहा, वहां केवल तीन देशों के प्रतिनिधि मौजूद रहे : सर्वशक्तिमान अमेरिकी (जिसका प्रतिनिधित्व अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने किया, बुरी तरह तबाह हो चुके लेकिन फिर भी अजेय ईरानियों का नेतृत्व वहां की संसद के सभापति मोहम्मद बाघेर ग़ालिबाफ ने किया। (क्योंकि या तो अली लारीजानी जैसे अधिकांश शीर्ष ईरानी नेता मारे जा चुके या घायल हैं, जैसे सुप्रीम लीडर मोज़तबा खामेनेई) और पाकिस्तान - वहीं कुछ और भी मुल्क होंगे, जिन्होंने परदे के पीछे इस

फिल्म में ज़्यादा अहम किरदार निभाया। चीन, रूस, इस्राइल, लेबनान, सऊदी अरब, यूएई। ज़रा इन नामों पर नज़र डालें,कि किस प्रकार आगा खान डेवलपमेंट नेटवर्क द्वारा संचालित एक होटल में वैश्विक व्यवस्था में हलचल हुई होगी-यहां बात आगा खान की, इतिहास में रुचि रखने वाले बुजुर्गों को याद होगा कि वे भारतीय थे। वार्ता कक्ष में चीन के मौजूद न होने की वजह यह है कि वह बाहर रहकर तगड़ी भूमिका निभा रहा है- यानि पाकिस्तान का साथ। चीन कई दशकों से, पाकिस्तान को संकटों से उबारता आया है; उसके लिए सड़कें, हाईवे व बंदरगाह बनाए, और सैन्य निवेश किया, उसकी वायुसेना, उसकी परमाणु एवं मिसाइल क्षमता भी विकसित करवाई- यह इस्लामाबाद के एफ-6 इलाके के एक रेस्तरां में कॉफी पीते हुए, पाकिस्तानी भी कबूलते हैं कि अपने 'सदाबहार दोस्त' के लिए पाकिस्तान महज़ ग्राहक राष्ट्र है। लेकिन यदि पाकिस्तान के संबंधित पक्षों से रिश्ते बढ़िया न होते तब चीन शांति वार्ता में इतनी अहम भूमिका नहीं निभा पाता।

यही वजह कि पश्चिम एशिया में हुए युद्ध से दो सबक हैं। पहला,विनम्र रहें, घमंडी न बनें। (देंग शियाओपिंग ने अपने दिशा-निर्देश 'ताओगुआंग यांगहुई' के ज़रिए इसे खूबसूरती से समझाया था - 'अपनी ताकत छिपाकर रखें और सही समय का इंतज़ार करें'। केवल अमेरिका व इस्राइल ही नहीं जिन्हें अपने से कहीं ज़्यादा कमज़ोर ईरान के सामने झुकने को विवश होना पड़ा। बात पड़ोस की करें तो, जैसे विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने पाकिस्तान को 'दलाल' कहकर कटाक्ष किया, इससे अब भारत को असहज स्थिति का सामना करना पड़ सकता है; क्योंकि वही 'दलाल' बीते कुछ दशकों की सबसे अहम वैश्विक वार्ताओं में से एक में बिचौलिए की भूमिका निभा रहा है।

मीडिया जगत में मेरे कई साथी भी इस बारे असमंजस में हैं कि आज पाकिस्तान की भूमिका का वर्णन कैसे किया जाए—क्या वह शक्तिशाली मध्यस्थ है? एक महत्वहीन संदेशवाहक? कोई अप्रत्यक्ष सहयोगी? या फिर हाशिए पर आता एक कमज़ोर राष्ट्र, जो अकाल, युद्ध एवं आतंकवाद की मार झेल रहा है? कदाचित या तो उस पर उक्त तमाम विशेषण लागू होते हैं या फिर एक भी नहीं। अब जबकि धुरंधर-2 बॉक्स ऑफिस पर 1,000 करोड़ रुपये का आंकड़ा पार कर चुकी है, शायद उस समय असली सवाल बनता है कि यदि हमें पाकिस्तान से नफरत होनी चाहिए, तब फिर उसको लेकर इतना जुनून क्यों?

पश्चिम एशिया युद्ध से मिलने वाला दूसरा सबक है कि भारत और पाकिस्तान जैसे 'द्वितीय श्रेणी' राष्ट्र किसी एक पक्ष के पाले में होना गवारा नहीं कर सकते। लगता है, पश्चिम एशिया संकट से भारत ने यह सबक सीख लिया ; क्योंकि शुरू में इस्राइल की ओर झुकाव के बाद, अब तटस्थता वाले केंद्र-बिंदु की ओर सरकने की कोशिश हो रही है। यही वजह है, यह बात दिमाग को कचोटती है कि जिस दिन पाकिस्तान, ईरान और अमेरिका के बीच युद्धविराम कराने में बिचौलिए की भूमिका निभा रहा था, ठीक उसी दिन विदेश मंत्री जयशंकर संयुक्त अरब अमीरात में क्यों मौजूद थे- जबकि इस युद्ध दौरान संयुक्त अरब अमीरात, ईरान के निशाने पर रहने वाले पसंदीदा लक्ष्यों में से एक था; क्योंकि उसे बतौर अमेरिका के सहयोगी देखा जा रहा था और नतीजतन इस्राइल को भी।

खास बात, भारत ने चीन के मामले में यह सबक अच्छी तरह सीख लिया। यह स्वीकार कर लेना कि पाकिस्तान के मुकाबले चीन कहीं ज़्यादा ताकतवर दुश्मन है-1998 में, तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार ब्रजेश मिश्र ने चीन को वह वजह बताया था जिसके चलते भारत ने परमाणु शक्ति बनने की निर्णय रेखा लांघी थी-और 2020 में गलवान टकराव के बावजूद, जिसमें 20 भारतीय सैनिक शहीद हुए थे, चीन एक बार फिर भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बन गया।

भारत ने बृहद परिदृश्य के परिप्रेक्ष्य में चीन को लेकर अपने पुराने रुख को बदलना सीख लिया –यह अहसास करते हुए कि दूसरे लोग उसी कहानी पर अलग नज़रिया संभव है। यही वजह है, इस्लामाबाद में पाकिस्तान की मध्यस्थता से हुई बातचीत इतनी अहम है। भले चीन वार्ता कक्ष में उपस्थित न हो, लेकिन इस वार्ता प्रक्रिया में सबसे अहम किरदार है। अगर चीन का साथ न होता, तो मध्यस्थता करने की पाकिस्तान की पेशकश का कोई खास मोल न होता। ट्रंप भी इसे स्वीकार करते हैं। और इससे पाकिस्तान को खुशी-खुशी 'दलाल' बनने की अनुमति मिल गई। भारत भी यह मानता है। लेकिन क्योंकि विदेश मंत्रालय ने पाकिस्तान के साथ क्या किया जाए, इस पर खुद गुंझल में फंसा है- यह निर्णय कि जब तक सीमा पार से आतंकवाद को प्रायोजित करना बंद नहीं होता तब तक वार्ता नहीं; ऐसा करके असल में पाकिस्तान के उस सैन्य-प्रतिष्ठान को, जिसके हाथ में आतंकियों की लगाम है, दोनों देशों के रिश्तों पर वीटो अधिकार दे रखा है, इससे भारत का अपना वजन कमज़ोर पड़ जाता है-चीन रूपी पहेली का हल भी बेवजह अनसुलझा है।

निश्चित, पाकिस्तान अपनी हैसियत से ज्यादा भूमिका निभा रहा है—वह अमेरिकियों की खुशामद कर रहा, चीन से गठबंधन बनाए है, खुद को सऊदी अरब के हाथों बेच रहा है और ईरान को रिझाने की कोशिश जारी है। लेकिन बड़ा सवाल यह है कि भारत अपनी वास्तविक क्षमता के मुकाबले इतनी कमज़ोर भूमिका क्यों रखे है? खासकर तब,जबकि स्पष्ट दिख रहा है कि इसका मुख्य प्रतिद्वंद्वी चीन, ईरान युद्ध और शांति वार्ताओं में पाकिस्तान की भूमिका का उपयोग कर खुद को दुनिया की सबसे बड़ी ताकत के तौर पर स्थापित करने की कोशिश में है। भारत का पाकिस्तान को लेकर जुनून केवल उस तक ही सीमित क्यों है, जबकि इस 'इस्लामी गणराज्य' के सिंहासन के पीछे असल शक्ति चीन है?

प्रेरणा

आत्मबोध, विश्वास और ईमानदारी की शाश्वत सीख

प्राचीन चीनी दार्शनिक परंपरा में कन्फ्यूशियस को केवल एक विचारक के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसे मार्गदर्शक के रूप में देखा जाता है जिन्होंने मनुष्य के भीतर नैतिक चेतना और आत्मबोध को जगाने का प्रयास किया। उनसे जुड़ी एक प्रेरक कथा छठी शताब्दी के आसपास की मानी जाती है, जिसमें उनके पुत्र कांग ली और चिंतक चेन जिकिन के बीच हुए संवाद के माध्यम से जीवन के गहरे सत्य उजागर होते हैं। यह कथा केवल ऐतिहासिक प्रसंग नहीं, बल्कि उस दर्शन का प्रतीक है जो शिक्षा को बाहरी ज्ञान से अधिक आंतरिक परिवर्तन का साधन मानता है। कथा के अनुसार कन्फ्यूशियस ने अपने पुत्र कांग ली को अध्ययन के लिए चेन जिकिन के पास भेजा। उस समय यह एक साधारण शिक्षा यात्रा नहीं थी, बल्कि एक ऐसा अवसर था जहां एक युवा मन को जीवन के मूल्यों और आत्मिक अनुशासन की ओर ले जाया जाना था। कहा जाता है कि कन्फ्यूशियस और चेन जिकिन के बीच कभी औपचारिक संवाद नहीं देखा गया, फिर भी दोनों एक-दूसरे के विचारों और चरित्र के प्रति अत्यंत सम्मान रखते थे। यह अपने आप में इस बात का संकेत है कि वास्तविक ज्ञान शब्दों से अधिक आचरण में प्रकट होता है। जब कांग ली अपने शिक्षक के पास पहुंचे, तो चेन जिकिन ने उनसे एक सरल प्रश्न पूछा कि क्या उनके पिता ने उन्हें ऐसा कुछ सिखाया है जो सामान्य ज्ञान से परे हो। कांग ली ने विनम्रता से उत्तर दिया कि उनके पिता ने उन्हें किसी रहस्यात्मक ज्ञान की शिक्षा नहीं दी, बल्कि जीवन की साधारण प्रतीत होने वाली बातों में छिपे गहरे अर्थों को समझने की प्रेरणा दी है। उन्होंने बताया कि उनके पिता अक्सर उनसे ऐसे प्रश्न पूछते थे जिनका उत्तर सीधे नहीं होता था, बल्कि जिनके माध्यम से सोचने और समझने की क्षमता विकसित होती थी। कांग ली ने एक अनुभव साझा किया जिसमें उनके पिता ने उनसे पूछा था कि क्या वे कविता पढ़ते हैं। जब उन्होंने कहा कि वे कविता नहीं पढ़ते, तो कन्फ्यूशियस ने उन्हें समझाया कि कविता केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि आत्मा को जागृत करने का माध्यम है। उनके अनुसार कविता मनुष्य की भावनाओं को संवेदनशील बनाती है, उसे जीवन के सौंदर्य को समझने की क्षमता देती है और भीतर की चेतना को ऊंचा उठाती है। यह शिक्षा केवल साहित्यिक रुचि तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह आत्मिक विकास की दिशा में एक कदम थी। इसके बाद उन्होंने देवताओं को अलंकृत करने की परंपराओं के बारे में एक प्रश्न पूछा। जब कांग ली ने स्वीकार किया कि उन्हें इस विषय की जानकारी नहीं है, तो कन्फ्यूशियस ने उन्हें इस अभ्यास को समझने की सलाह दी। इसका उद्देश्य केवल धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन कराना नहीं था, बल्कि यह समझाना था कि बाहरी अनुशासन और क्रियाएं मनुष्य के भीतर भी अनुशासन और जागरूकता विकसित करती हैं। जब व्यक्ति बाहरी व्यवस्था को समझने लगता है, तो वह अपने भीतर भी संतुलन स्थापित करता है। कन्फ्यूशियस की शिक्षण शैली में सबसे महत्वपूर्ण तत्व स्वतंत्रता था। उन्होंने कभी अपने पुत्र या शिष्यों पर यह दबाव नहीं डाला कि वे उनके निर्देशों का पालन करें या नहीं। उन्होंने यह जानने की कोशिश भी नहीं की कि उनकी बातों को कितनी गंभीरता से लिया गया। यह दृष्टिकोण इस विश्वास पर आधारित था कि जब मनुष्य को स्वतंत्रता के साथ सीखने दिया जाता है, तभी वह ज्ञान को वास्तव में आत्मसात करता है। दबाव में प्राप्त ज्ञान केवल जानकारी बनकर रह जाता है, जबकि स्वतंत्र अनुभव से प्राप्त ज्ञान जीवन का हिस्सा बन जाता है।

चेन जिकिन जब यह सारी बातें सुनते हैं, तो वे गहरे विचार में पड़ जाते हैं। उन्हें महसूस होता है कि एक साधारण प्रश्न के उत्तर में उन्हें जीवन के कई गहरे सत्य प्राप्त हुए हैं। पहला सत्य यह है कि कविता केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि आत्मा को जागृत करने का माध्यम है। दूसरा सत्य यह है कि परंपराएं केवल बाहरी क्रियाएं नहीं हैं, बल्कि वे आंतरिक विकास की प्रक्रिया का हिस्सा हैं। तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण सत्य यह है कि एक सच्चा ईमानदार व्यक्ति दूसरों की ईमानदारी की जांच नहीं करता। यह अंतिम विचार इस पूरी कथा का मूल संदेश है। ईमानदारी केवल व्यक्तिगत गुण नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन की नींव है। जब मनुष्य दूसरों पर लगातार संदेह करता है, तो वह स्वयं भी मानसिक अशांति में जीता है। संदेह संबंधों को कमजोर करता है, जबकि विश्वास उन्हें मजबूत बनाता है। विश्वास केवल दूसरों के प्रति सम्मान नहीं, बल्कि स्वयं के भीतर शांति और स्थिरता का आधार भी है। कन्फ्यूशियस का दर्शन यह स्पष्ट करता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान देना नहीं, बल्कि मनुष्य के चरित्र का निर्माण करना है। वे मानते थे कि शिक्षक का कार्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि शिष्य के भीतर सोचने, समझने और आत्मचिंतन की क्षमता विकसित करना है। यही कारण है कि उन्होंने अपने पुत्र पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता महसूस नहीं की, क्योंकि वे जानते थे कि सच्चा ज्ञान स्वतंत्रता में ही फलता-फूलता है।

यह कथा आत्मबोध की अवधारणा को भी गहराई से स्पष्ट करती है। आत्मबोध कोई बाहरी उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह भीतर की यात्रा है। जब मनुष्य जीवन की सामान्य घटनाओं में गहरे अर्थ देखने लगता है, तब वह आत्मबोध की ओर अग्रसर होता है। कविता, परंपराएं और ईमानदारी इस यात्रा के महत्वपूर्ण चरण हैं, जो मनुष्य को बाहरी दुनिया से भीतर की दुनिया की ओर ले जाते हैं। आधुनिक समय में यह संदेश और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। आज के समाज में जहां प्रतिस्पर्धा और अविश्वास बढ़ रहा है, वहां विश्वास और ईमानदारी की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक है। यदि हम लगातार दूसरों की ईमानदारी पर संदेह करेंगे, तो हम स्वयं भी मानसिक तनाव और अस्थिरता में फंस जाएंगे। लेकिन यदि हम विश्वास को अपनाते हैं, तो हमारे संबंध अधिक मजबूत और जीवन अधिक शांतिपूर्ण बन सकता है। यह कथा हमें यह भी सिखाती है कि जीवन की जटिलताओं का उत्तर हमेशा जटिल नहीं होता। कई बार सरल विचारों में ही सबसे गहरी सच्चाई छिपी होती है। कविता हमें संवेदनशील बनाती है, परंपराएं हमें अनुशासित करती हैं और ईमानदारी हमें स्थिरता देती है। जब ये तीनों तत्व एक साथ आते हैं, तो मनुष्य एक संतुलित और जागरूक जीवन जीने में सक्षम होता है। अंततः यह कथा केवल एक ऐतिहासिक प्रसंग नहीं, बल्कि एक शाश्वत संदेश है जो हर युग में प्रासंगिक रहता है। यह हमें यह सिखाती है कि सच्ची शिक्षा वही है जो व्यक्ति को भीतर से बदल दे। आत्मबोध, विश्वास और ईमानदारी मिलकर उस मार्ग का निर्माण करते हैं जो मनुष्य को केवल ज्ञानवान नहीं, बल्कि वास्तव में श्रेष्ठ इंसान बनाता है।

बंगाल में आक्रामक हुआ चुनाव प्रचार, जारी हुआ भाजपा संकल्प पत्र

असम, केरल व पुद्दुचेरी में विधानसभा चुनाव हेतु मतदान संपन्न हो जाने के बाद पश्चिम बंगाल व तमिलनाडु के चुनाव प्रचार मे आक्रामकता आ गई है। बंगाल के सन्दर्भ में प्राप्त विश्लेषणों के अनुसार ऐसा लग रहा है कि इन चुनावों में बंगाल में मात्र दो प्रतिशत मतों के अंतर से ही सरकार बनने का खेल होने वाला है। सत्ता के लिए प्रमुख लड़ाई चौथी बार मुख्यमंत्री बनने के लिए प्रयासरत ममता बनर्जी तथा भारतीय जनता पार्टी के बीच ही है और यही दोनों आक्रामक रूप से चुनाव प्रचार भी कर रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी ने पहले ममता सरकार के खिलाफ श्वेत पत्र जारी किया फिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तीन विशाल जनसभाओं के बाद गृहमंत्री अमित शाह ने भाजपा का संकल्प पत्र जारी किया। इस बीच बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी व उनकी पार्टी के कुछ नेताओं ने बीजेपी की बढ़ती लोकप्रियता से घबराकर हिंसा को बढ़ावा देने वाली बयानबाजी आरम्भ कर दी। अभिषेक बनर्जी तो अपनी रैली में सीधे तौर पर भाजपा के कार्यकर्ताओं की गर्दन, हाथ, पैर तोड़ने तक की बात कह रहे हैं। इसके लिए उनके खिलाफ चुनाव आयोग की ओर से एफआईआर भी की गई है। बंगाल की मुख्यमंत्री ने स्वयं चुनाव आयोग की कार्य प्रणाली के खिलाफ मोर्चा खोल रखा है और लगातार कोर्ट में अभियान चला रही हैं। बंगाल की मतदाता सूची से लगभग 91 लाख मतदाताओं के नाम कट जाने से वह अधिक परेशान हैं।

भाजपा भी इस बार सरकार बनाने के लिए लड़ रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी हल्दिया, आसनसोल व सिउड़ी में विशाल जनसभाओं में बंगाल की जनता को छह गारंटियां दीं जिनको भाजपा के संकल्प पत्र में दोहरा कर मजबूत किया गया। इन जनसभाओं में प्रधानमंत्री मोदी ने जहाँ एक ओर विकास और सुशासन का एजेंडा सामने रखा वहीं दूसरी ओर टीएमसी सरकार पर चौतरफा प्रहार किया। प्रधानमंत्री ने कहा कि सरकार बनने के बाद सबका साथ सबका विकास तो होगा ही लेकिन जिन लोगों ने लूटा है, उन लुटेरों का हिसाब भी होगा। उन्होंने ममता सरकार पर हमला बोलते हुए कहा कि विगत 15 वर्षों में राज्य में सिंडीकेट, कट मनी और गुंडाराज का बोलबाला रहा है जिससे आम जनता का विश्वास टूटा है। भाजपा सरकार आने पर भय की जगह भरोसा कायम किया जायेगा। भ्रष्टाचार करने वालों को जेल भेजेंगे। सरकारी सिस्टम जनता के लिए जवाबदेह होगा। हर घोटाले, भ्रष्टाचार ओर बहन बेटियों के साथ हुए अन्याय की फाइलें, खुलेंगी। घुसपैठियों को खोज खोजकर खदेड़ा जाएगा।

प्रधानमंत्री मोदी की विशाल जनसभाओं के बाद गृहमंत्री अमित शाह ने भाजपा का संकल्प पत्र जारी किया है जिसमें कई महत्वपूर्ण घोषणाएं की गयी हैं। बंगाल में कोलकाता के भाजपा कार्यालय में एक विशाल वंदेमातरम संग्रहालय बनाया जाएगा। गृहमंत्री ने कहा कि हम वंदे मातरम की परिकल्पना के माध्यम से बंगाल की संस्कृति को वैश्विक मंच पर प्रदर्शित करेंगे। अभी वंदेमातरम की 150 वीं जयंती पर संसद में विशेष सत्र का आयोजन हो चुका है तथा साथ ही अब सरकारी आयोजनों में संपूर्ण वंदेमातरम गायन अनिवार्य किया जा चुका है। बंगाल की दृष्टि से वंदेमातरम संग्रहालय की स्थापना एक महत्वपूर्ण घोषणा है।

सिंगूर को लेकर घोषणा- भारतीय जनता पार्टी ने अपने संकल्प पत्र में दूसरी बड़ी घोषणा सिंगूर को लेकर की है जिसमें भाजपा ने सरकार बनने के बाद वहां एक औद्योगिक पार्क बनाने का संकल्प किया है। बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने सिंगूर से अपनी राजनैतिक जमीन बनाने की शुरुआत की थी। पश्चिम बंगाल का सिंगूर विवाद भारत के औद्योगिक और राजनीतिक इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना रही है। सिंगूर विवाद वर्ष 2006 में शुरू हुआ था जब तत्कालीन वामपंथी सरकार ने हुगली जिले के सिंगूर में टाटा मोटर्स को नैनो कार बनाने के लिए करीब 997 एकड़ जमीन दी। सरकार ने यह जमीन पुराने भूमि अधिग्रहण कानून के अंतर्गत ली थी किंतु सरकार ने निर्णय का कुछ स्थानीय किसान संगठनों ने विरोध किया था तब ममता बनर्जी किसानों के समर्थन में आ गई और मां, माटी और मानुष का नारा दिया। आज बंगाल मे सभी कल कारखाने बंद हो चुके हैं और भारी बेरोजगारी है। यही कारण है कि भाजपा ने अब सिंगूर में ही औद्योगिक पार्क बनवाने का संकल्प लिया है।

संकल्प पत्र में राज्य में कानून व्यवस्था सुधारने और विकास को गति देने को भाजपा का लक्ष्य बताया गया है। भाजपा ने अपने घोषणापत्र में महिलाओं, युवाओं, किसानों, बुजुर्गों एवं व्यापारियों के लिए घोषणा की है। भाजपा के संकल्प पत्र में बंगाल मे राजनीतिक हिंसा की जांच के लिए उच्चतम न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश के नेतृत्व में एक विशेष आयोग बनाया जाएगा और सभी मामलों की जांच कर दोषियों को सजा दिलाई जाएगी। साथ ही कानून व्यवस्था की स्थिति पर श्वेत पत्र जारी किया जाएगा। इसके अलावा घुसपैठियों के खिलाफ जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाते हुए डिटेक्ट, डिलीट और डिपोर्ट नीति लागू की जाएगी। कर्मचारियों के लिए महंगाई भत्ता लागू किया जाएगा। महिलाओं को हर महीने 3000 रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी। आयुष्मान भारत सहित केंद्र सरकार की सभी योजनाएं बंगाल में लागू की जाएंगी। भाजपा ने बंगाल में भी समान नागरिक संहिता लागू करने का संकल्प लिया है और युवाओं को एक करोड़ रोजगार देने का वादा भी किया है।

भाजपा वर्ष 2026 में बंगाल से ममता सरकार की विदाई तय करने के लिए सतर्कता के साथ कड़ी मेहनत कर रही है। बंगाल के विश्लेषकों का मत है कि बंगाल में ममता दीदी का दुर्ग भेदना अभी भी बहुत कठिन है क्योंकि चुनावी हिंसा बहुत अधिक होती है लेकिन इस बार चुनाव आयोग भी बहुत सख्त है अतः परिस्थिति बदल सकती है। इस बार चुनावों के बाद भी दो माह तक बंगाल में केंद्रीय बल तैनात रहेंगे। विश्लेषकों कहना है कि यदि इस बार बंगाल चुनाव बिना किसी हिंसा के संपन्न हो जाते हैं तो भाजपा सरकार बनने की सम्भावना भी बन सकती है।

अभियान

चितिरई उत्सव: आस्था, संस्कृति और सामूहिक चेतना का जीवंत महाकाव्य

दक्षिण भारत की सांस्कृतिक आत्मा यदि किसी एक उत्सव में सबसे गहराई से प्रकट होती है, तो वह है मदुरै स्थित मीनाक्षी अम्मन मंदिर का चितिरई उत्सव। यह केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि इतिहास, लोकविश्वास, आध्यात्मिकता और सामाजिक एकता का ऐसा अद्भुत संगम है, जिसे सही अर्थों में एक जीवंत महाकाव्य कहा जा सकता है। इस उत्सव के दौरान पूरा मदुरै शहर एक रंगमंच में बदल जाता है, जहां आस्था के पात्र स्वयं देवता बनकर उतरते हैं और मनुष्य उनके साक्षी नहीं, बल्कि सहभागी बन जाते हैं।

चितिरई उत्सव की सबसे बड़ी विशेषता इसकी व्यापकता और समावेशिता है। यह उत्सव केवल मंदिर की दीवारों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरे शहर की जीवनधारा में प्रवाहित हो जाता है। गलियाँ, सड़कें, बाजार और नदी तट—सब कुछ एक ही आध्यात्मिक ऊर्जा में रंग जाते हैं। यह वही भावना है जो भारत के अन्य बड़े धार्मिक आयोजनों में भी दिखाई देती है, जहां धर्म केवल पूजा-पाठ नहीं, बल्कि सामूहिक जीवन का उत्सव बन जाता है।

इस उत्सव के पीछे दो प्रमुख पौराणिक कथाएँ जुड़ी हुई हैं। पहली कथा के अनुसार, देवी मीनाक्षी, जो मदुरै की राजकुमारी मानी जाती हैं, और भगवान शिव के रूप में सुंदरेश्वर के बीच दिव्य विवाह संपन्न होता है। यह विवाह केवल दो देवताओं का मिलन नहीं, बल्कि शक्ति और चेतना के संतुलन का प्रतीक है। देवी मीनाक्षी शक्ति का स्वरूप हैं, जबकि शिव चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन दोनों का मिलन सृष्टि के संतुलन का दार्शनिक संकेत देता है।

दूसरी कथा में इस उत्सव को भगवान विष्णु के रूप में अलगर से जोड़ा जाता है, जिन्हें देवी मीनाक्षी का भाई माना जाता है। लोकमान्यता के अनुसार, अलगर विवाह समारोह में शामिल होने के लिए यात्रा करते हैं, लेकिन समय पर नहीं पहुंच पाते और वैगई नदी के तट पर ही रुक जाते हैं। यह प्रसंग केवल पौराणिक कथा नहीं, बल्कि जीवन के एक गहरे सत्य का प्रतीक है—समय, संबंध और भावनाओं का संतुलन यदि बिगड़ जाए, तो परिणाम अधूरे रह जाते हैं, फिर भी संबंधों की पवित्रता बनी रहती है।

चितिरई उत्सव की शुरुआत “कोडी एट्रम” यानी ध्वजारोहण से होती है। जैसे ही मंदिर में ध्वज फहराया जाता है, पूरा वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर जाता है। यह संकेत होता है कि अब देवी का शासन स्थापित हो चुका है और मदुरै शहर एक पवित्र यात्रा में प्रवेश कर चुका है। इस क्षण से लेकर समापन तक पूरा शहर एक ही भाव में बंध जाता है—भक्ति, उल्लास और सामूहिकता का भाव।

उत्सव का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा मीनाक्षी तिरुकल्याणम यानी दिव्य विवाह होता है। मंदिर परिसर में हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में देवी मीनाक्षी और सुंदरेश्वर का विवाह वैदिक विधि-विधान से संपन्न होता है। यह दृश्य केवल धार्मिक नहीं, बल्कि भावनात्मक रूप से अत्यंत गहरा होता है। श्रद्धालु इसे केवल देवताओं का विवाह नहीं मानते, बल्कि वे इसे अपने जीवन का हिस्सा मानकर अनुभव करते हैं। यह भाव इस बात को दर्शाता है कि भारतीय संस्कृति में देवता दूरस्थ नहीं, बल्कि पारिवारिक और आत्मीय होते हैं।

इस विवाह के बाद रथ यात्रा या “थेरु उत्सव” शुरू होता है। विशाल और भव्य रूप से सजाए गए रथों में देवी-देवताओं की मूर्तियाँ पूरे शहर में भ्रमण करती हैं। यह यात्रा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि जनसहभागिता का उत्सव होती है। लाखों लोग सड़कों पर उमड़ते हैं, भक्ति गीत गाते हैं, नृत्य करते हैं और वातावरण को एक अद्भुत ऊर्जा से भर देते हैं। यह दृश्य किसी भी दर्शक के लिए केवल उत्सव नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक अनुभव बन जाता है।

चितिरई उत्सव का सबसे अनोखा और भावनात्मक क्षण अलगर का वैगई नदी में प्रवेश होता है। जब अलगर नदी में उतरते हैं, तो यह केवल एक अनुष्ठान नहीं, बल्कि प्रतीकात्मक दर्शन होता है। यह उस भावना का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें देर से पहुँचना, अधूरेपन के बावजूद संबंध बनाए रखना और फिर भी जीवन की निरंतरता को स्वीकार करना शामिल है। यह दृश्य मनुष्य को यह सोचने पर मजबूर करता है कि जीवन में पूर्णता नहीं, बल्कि स्वीकार्यता ही वास्तविक शांति है।

इस पूरे उत्सव की सबसे बड़ी विशेषता इसका सामाजिक स्वरूप है। चितिरई उत्सव केवल धार्मिक अनुष्ठानों का समूह नहीं, बल्कि समाज को जोड़ने वाला एक मजबूत सांस्कृतिक धागा है। इसमें समाज के हर वर्ग की भागीदारी होती है—व्यापारी, कलाकार, कारीगर, किसान और विद्यार्थी सभी इस उत्सव का हिस्सा बनते हैं। लोकनृत्य, नाटक, संगीत और परंपरागत कला रूपों के माध्यम से यह उत्सव सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का मंच बन जाता है।

यह उत्सव मदुरै को केवल एक शहर नहीं रहने देता, बल्कि उसे एक जीवंत सांस्कृतिक केंद्र में बदल देता है। दूर-दूर से आने वाले लोग इस आयोजन को केवल देखने नहीं, बल्कि अनुभव करने आते हैं। यह अनुभव उन्हें यह एहसास कराता है कि भारतीय संस्कृति केवल इतिहास नहीं, बल्कि जीवित परंपरा है, जो हर पीढ़ी के साथ आगे बढ़ती रहती है।

चितिरई उत्सव का एक और महत्वपूर्ण पहलू देवी मीनाक्षी का स्वरूप है। वे केवल एक देवी नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र शासक और योद्धा के रूप में भी पूजी जाती हैं। यह भारतीय संस्कृति की उस गहराई को दर्शाता है जिसमें नारी शक्ति को केवल पूजनीय नहीं, बल्कि नेतृत्वकर्ता के रूप में भी स्वीकार किया जाता है। उनका विवाह उनके स्वतंत्र अस्तित्व को समाप्त नहीं करता, बल्कि उसे संतुलन और विस्तार प्रदान करता है।

आज के आधुनिक युग में भी चितिरई उत्सव की प्रासंगिकता कम नहीं हुई है। डिजिटल तकनीक और आधुनिक जीवनशैली के बावजूद लोग इस उत्सव से उतने ही गहराई से जुड़े हुए हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि संस्कृति केवल अतीत की धरोहर नहीं होती, बल्कि वह वर्तमान में भी जीवित रहती है और भविष्य को दिशा देती है।

अंततः, चितिरई उत्सव केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह भारतीय जीवन दर्शन का एक सजीव प्रतीक है। यह हमें सिखाता है कि आस्था, समाज और संस्कृति अलग-अलग नहीं, बल्कि एक ही धारा के विभिन्न रूप हैं। जब ये तीनों एक साथ प्रवाहित होते हैं, तो एक ऐसा उत्सव जन्म लेता है जो केवल देखा नहीं जाता, बल्कि जिया जाता है। यही चितिरई उत्सव की आत्मा है और यही उसकी शाश्वत शक्ति भी।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, “Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, “Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

प्रसाद में जहर की साजिश से दहला सूरत, 'लड्डू कांड' में परिवार बाल-बाल बचा; CCTV में दिखे पांच संदिग्ध, जांच तेज

सूरत। गुजरात के सूरत जिले से सामने आए एक सनसनीखेज मामले ने पूरे इलाके में दहशत फैला दी है, जहां धार्मिक आस्था के प्रतीक 'प्रसाद' को हथियार बनाकर एक पूरे परिवार को खत्म करने की साजिश रची गई। उतरण थाना क्षेत्र के शालीग्राम हाइट्स में हुई इस घटना ने न केवल स्थानीय लोगों को झकझोर दिया है, बल्कि सुरक्षा और सामाजिक विश्वास दोनों पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। गनीमत यह रही कि समय रहते पीड़ित परिवार को अस्पताल पहुंचा दिया गया, जिससे एक बड़ा हादसा टल गया।

मामले के अनुसार, गोरधनभाई वसरामभाई डोंडा के घर के बाहर अज्ञात लोगों द्वारा जहर मिला हुआ लड्डू 'प्रसाद' के रूप में टांग दिया गया था। आमतौर पर धार्मिक आस्था के चलते लोग ऐसे प्रसाद को बिना संदेह स्वीकार कर लेते हैं और ठीक यही इस साजिश की सबसे खतरनाक कड़ी साबित हो सकती थी। गोरधनभाई ने इसे श्रद्धा से घर के भीतर लाकर अपने परिवार के अन्य सदस्यों के साथ ग्रहण किया, लेकिन कुछ ही देर बाद उनकी तबीयत अचानक बिगड़ने लगी। परिवार के अन्य दो सदस्य भी गंभीर रूप से प्रभावित हुए, जिसके बाद हड़कंप मच गया।

परिजनों और पड़ोसियों की मदद से तीनों को तुरंत अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां उनका इलाज जारी है। डॉक्टरों के अनुसार, समय पर इलाज मिलने से उनकी जान बच गई, अन्यथा परिणाम बेहद भयावह हो सकते थे। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और फोरेंसिक टीम मौके पर पहुंची और पूरे मामले की गहन जांच शुरू कर दी गई।

पुलिस की प्रारंभिक जांच में यह मामला किसी सुनियोजित साजिश की ओर इशारा कर रहा है। घर के बाहर लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालने पर पांच संदिग्ध लोगों की गतिविधियां सामने आई हैं, जो घटना के समय आसपास मंडराते दिखाई दे रहे हैं। पुलिस ने इन संदिग्धों की पहचान कर पूछताछ शुरू कर दी है और उनकी भूमिका की गहराई से जांच की जा रही है।

जांच अधिकारियों का मानना है कि इस वारदात को अंजाम देने वाला कोई बाहरी व्यक्ति नहीं, बल्कि परिवार की दिनचर्या और गतिविधियों से भली-भांति परिचित व्यक्ति हो सकता है। प्रसाद रखने का सही समय चुनना, यह सुनिश्चित करना कि परिवार के सदस्य घर पर मौजूद हों, और बिना शक पैदा किए लड्डू को इस तरह रखना—ये सभी संकेत किसी करीबी या निजी दुश्मनी की ओर इशारा करते हैं। पुलिस इस एंगल से भी जांच कर रही है कि कहीं यह पारिवारिक विवाद, आर्थिक लेन-देन या व्यक्तिगत रंजिश का परिणाम तो नहीं।

इस घटना ने पूरे इलाके में भय और असुरक्षा का माहौल पैदा कर दिया है। स्थानीय निवासी अब अपने घरों के बाहर रखी किसी भी वस्तु को लेकर सतर्क हो गए हैं। धार्मिक भावनाओं के साथ इस तरह का खिलवाड़ समाज में अविश्वास पैदा करने वाला है, जिसे लेकर लोगों में गहरी चिंता है।

गौरतलब है कि इसी तरह की एक और दर्दनाक घटना हाल ही में अहमदाबाद के चंदखेड़ा इलाके में सामने आई थी, जहां दो सगी बहनों को डोसा में जहर मिलाकर खिलाया गया था, जिससे उनकी मौत हो गई, जबकि उनके माता-पिता अभी भी अस्पताल में जिंदगी की जंग लड़ रहे हैं। इन दोनों घटनाओं के बीच समानता ने जांच एजेंसियों को भी सतर्क कर दिया है और यह संभावना भी तलाशी जा रही है कि कहीं इन मामलों के बीच कोई कड़ी तो नहीं है।

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि सूरत की इस घटना को अत्यंत गंभीरता से लिया जा रहा है और सभी संभावित पहलुओं पर जांच की जा रही है। फोरेंसिक रिपोर्ट का इंतजार किया जा रहा है, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि लड्डू में किस प्रकार का जहर मिलाया गया था। साथ ही, संदिग्धों के कॉल रिकॉर्ड, लोकेशन और आपसी संबंधों की भी जांच की जा रही है।

प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि वे सतर्क रहें और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की तुरंत सूचना पुलिस को दें। साथ ही, बिना पुष्टि के किसी भी अज्ञात वस्तु या खाद्य सामग्री का सेवन न करने की सलाह दी गई है। यह घटना एक चेतावनी के रूप में सामने आई है कि बदलते समय में अपराधी किस हद तक जा सकते हैं और किस तरह आम जनजीवन को निशाना बना सकते हैं।

फिलहाल, पुलिस का दावा है कि जल्द ही इस साजिश का पर्दाफाश कर आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। लेकिन तब तक सूरत का यह 'लड्डू कांड' लोगों के मन में डर और कई अनसुलझे सवाल छोड़ गया है—आखिर आस्था के नाम पर जहर घोलने की यह साजिश किसने और क्यों रची?

ट्रेन संख्या 19209/10 भावनगर-ओखा–भावनगर एक्सप्रेस में तृतीय वातानुकूलित कोच की स्थायी वृद्धि

यात्रियों की बढ़ती मांग एवं यात्रा सुविधाओं को और अधिक सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से पश्चिम रेलवे ने एक महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए ट्रेन संख्या 19209/10 भावनगर टर्मिनस–ओखा–भावनगर टर्मिनस एक्सप्रेस में एक तृतीय वातानुकूलित (थर्ड एसी) कोच स्थायी रूप से जोड़े जाने का निर्णय लिया है।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने जानकारी देते हुए बताया कि वर्तमान में एक तृतीय श्रेणी वातानुकूलित कोच (3rd AC) कोच अस्थायी रूप से लगाया जा रहा था, जिसे रेल प्रशासन द्वारा स्थायी रूप से लगाने का निर्णय लिया गया है।

यह संशोधित कोच संरचना निम्नानुसार प्रभावी होगीः

ट्रेन संख्या 19209 (भावनगर टर्मिनस–ओखा) पर दिनांक 01 जून, 2026 से

ट्रेन संख्या 19210 (ओखा–भावनगर टर्मिनस) पर दिनांक 02 जून, 2026 से इस निर्णय से यात्रियों को अधिक आरक्षित सीटों की उपलब्धता सुनिश्चित होगी तथा उनकी यात्रा और अधिक आरामदायक एवं सुविधाजनक बनेगी।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने यात्रियों से अपील की है कि वे इस वातानुकूलित कोच की सुविधा का अधिकतम लाभ उठाते हुए सुरक्षित एवं आरामदायक यात्रा का अनुभव प्राप्त करें।

वडोदरा में स्थानीय निकाय चुनावों की तैयारी तेज, निष्पक्ष मतदान के लिए ऑब्ज़र्वर लोचन सेहरा ने दिए सख्त निर्देश

वडोदरा। गुजरात में प्रस्तावित स्थानीय निकाय आम चुनावों को लेकर प्रशासनिक तैयारियां अब अंतिम चरण में पहुंचती दिखाई दे रही हैं। इसी क्रम में वडोदरा में इलेक्शन ऑब्ज़र्वर लोचन सेहरा की अध्यक्षता में एक अहम समीक्षा बैठक आयोजित की गई, जिसमें चुनावी व्यवस्थाओं को लेकर व्यापक स्तर पर मंथन हुआ। बैठक में जिला एवं तालुका पंचायत ऑब्ज़र्वर राज सुथार की उपस्थिति ने इसे और महत्वपूर्ण बना दिया।

बैठक का मुख्य उद्देश्य चुनाव प्रक्रिया को निष्पक्ष, पारदर्शी और व्यवस्थित ढंग से संपन्न कराना था। इस दौरान रिटर्निंग ऑफिसर्स और अन्य चुनाव अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए गए कि किसी भी स्तर पर लापरवाही या पक्षपात

की गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। ऑब्ज़र्वर लोचन सेहरा ने कहा कि लोकतंत्र में चुनाव केवल एक प्रक्रिया नहीं, बल्कि जनविश्वास का सबसे बड़ा आधार होते हैं, इसलिए इसकी पवित्रता बनाए रखना सभी अधिकारियों की प्राथमिक जिम्मेदारी है।

उन्होंने म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन, जिला पंचायत, तालुका पंचायत और नगर पालिकाओं के चुनावों के लिए की जा रही तैयारियों की विस्तार से समीक्षा की। मतदान केंद्रों की व्यवस्था, सुरक्षा प्रबंध, मतदान कर्मियों की तैनाती और संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर विशेष ध्यान देने को कहा गया। उन्होंने स्पष्ट निर्देश दिए कि सभी अधिकारी मॉडल कोड ऑफ कंडक्ट का सख्ती से पालन सुनिश्चित करें, ताकि चुनावी प्रक्रिया पूरी तरह निष्पक्ष बनी रहे।

बैठक के दौरान जिले के संवेदनशील मतदान केंद्रों और कानून-व्यवस्था की स्थिति पर भी गंभीरता से चर्चा की गई। अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि ऐसे क्षेत्रों में अतिरिक्त सतर्कता बरती जाए और सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम किए जाएं। पुलिस और प्रशासन के बीच समन्वय को मजबूत करने पर भी जोर दिया गया, ताकि किसी भी अप्रिय स्थिति से समय रहते निपटा जा सके।

जिला चुनाव अधिकारी एवं कलेक्टर अनिल धामेलिया ने अब तक की तैयारियों का विस्तृत ब्यौरा प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि जिले में चुनावी व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जा चुके हैं और आगामी दिनों में इन्हें और सुदृढ़ किया जाएगा। उनके अनुसार, प्रशासन का लक्ष्य है कि हर मतदाता बिना किसी बाधा के अपने मताधिकार का प्रयोग कर सके।

उप जिला चुनाव अधिकारी केलैया ने प्रेजेंटेशन के माध्यम से ईवीएम (इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन) के आवंटन, स्ट्रांग रूम की सुरक्षा व्यवस्था और मतदान कर्मियों के प्रशिक्षण से संबंधित जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ईवीएम की सुरक्षा के लिए बहु-स्तरीय व्यवस्था की गई है और स्ट्रांग रूम में चौबीसों घंटे निगरानी रखी जाएगी। इसके अलावा, मतदान कर्मियों को प्रशिक्षित करने के लिए विशेष सत्र आयोजित किए जा रहे हैं, ताकि मतदान के दिन किसी प्रकार की तकनीकी या प्रक्रियागत समस्या न आए।

अहमदाबाद मंडल ने 97.5% पंक्चुअलिटी के साथ रचा कीर्तिमान, रेल मंत्री ने की सराहना

माननीय रेल मंत्री ने श्री अश्विनी वैष्णव ने हाल ही में आयोजित सभी महाप्रबंधकों, मंडल रेल प्रबंधकों एवं वरिष्ठ अधिकारियों की उच्चस्तरीय कॉन्फ्रेंस में अहमदाबाद रेल मंडल के उत्कृष्ट परिचालन प्रदर्शन की विशेष सराहना की।

अहमदाबाद रेल मंडल ने यात्री गाड़ियों के संचालन में 97.5% की उल्लेखनीय समयपालन (पंक्चुअलिटी) प्राप्त कर भारतीय रेलवे के शीर्ष तीन मंडलों में स्थान अर्जित किया है। यह उपलब्धि न केवल मंडल की परिचालन दक्षता को दर्शाती है, बल्कि संपूर्ण भारतीय रेल के लिए एक आदर्श (रोल मॉडल) के रूप में स्थापित हुई है।

माननीय रेल मंत्री ने इस अवसर पर उन सभी रेलवे ज़ोनों को भी बधाई दी, जिन्होंने 85% से अधिक पंक्चुअलिटी हासिल की तथा चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद अपने प्रदर्शन में उल्लेखनीय सुधार दर्ज किया।

अपने संबोधन में रेल मंत्री ने कहा कि सतत प्रयासों, प्रभावी योजना एवं यात्री-केंद्रित दृष्टिकोण के माध्यम से भारतीय रेल सुरक्षित, गुणवत्तापूर्ण एवं विश्वसनीय यात्रा अनुभव प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने यह भी दोहराया कि आधुनिक तकनीक, उन्नत मॉनिटरिंग प्रणाली तथा बेहतर परिचालन प्रबंधन के माध्यम से रेलवे नेटवर्क को और अधिक सुदृढ़ एवं विश्वसनीय बनाया जा रहा है।

अहमदाबाद मंडल द्वारा परिचालन क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ अर्जित की गई हैं। मंडल द्वारा 320 मेल/एक्सप्रेस गाड़ियों, 44 प्रीमियम गाड़ियों तथा 48 DEMU/MEMU/लोकल ट्रेनों का सफल संचालन किया गया, जिनमें से 115 जोड़ी गाड़ियाँ अहमदाबाद मंडल से प्रारंभ/समाप्त होती हैं। इसके अतिरिक्त, प्रतिदिन लगभग 230 मालगाड़ियों का संचालन किया गया, जबकि मार्च 2026 के दौरान कुल 7,211 मालगाड़ियों का सफल परिचालन सुनिश्चित किया गया। परिचालन दक्षता में वृद्धि हेतु मंडल द्वारा 89 ट्रेनों की गति में सुधार करते हुए वित्तीय वर्ष 2025-26 में कुल 1,057 मिनट की बचत सुनिश्चित की गई। साथ ही, 23 ट्रेनों के यात्रा समय में 5 मिनट से लेकर सवा दो घंटे तक की कमी की गई। इसके अतिरिक्त, 4 स्थायी गति प्रतिबंध (PSR) को हटाकर ट्रेनों की गति एवं समयपालन में और अधिक सुधार किया गया।

इन उल्लेखनीय उपलब्धियों में मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश के कुशल नेतृत्व तथा परिचालन विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के समन्वित एवं समर्पित प्रयासों के लिए टीम अहमदाबाद को धन्यवाद दिया।

अहमदाबाद रेल मंडल भविष्य में भी नवाचार, दक्षता एवं यात्री-केंद्रित सेवाओं के माध्यम से भारतीय रेल को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहेगा।

पश्चिम रेलवे चलाएगी गांधीधाम-मालदा टाउन गांधीधाम समर स्पेशल ट्रेन

पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की भीड़ एवं मांग को ध्यान में रखते हुए गांधीधाम–मालदा टाउन–गांधीधाम के बीच समर स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है।

v ट्रेन संख्या 09463/09464 गांधीधाम-मालदा टाउन-गांधीधाम समर स्पेशल

ट्रेन संख्या 09463 गांधीधाम-मालदा टाउन समर स्पेशल दिनांक 19 अप्रैल 2026 (रविवार) को गांधीधाम से 12:30 बजे प्रस्थान करेगी तथा तीसरे दिन मंगलवार को 09:10 बजे मालदा टाउन पहुंचेगी।

इसी प्रकार, ट्रेन संख्या 09464 मालदा टाउन-गांधीधाम समर स्पेशल दिनांक 21 अप्रैल 2026 (मंगलवार) को मालदा टाउन से 17:35 बजे प्रस्थान करेगी तथा तीसरे दिन गुरुवार को 15:30 बजे गांधीधाम पहुंचेगी।

यह ट्रेन मार्ग में दोनों दिशाओं में सामाखियाली, राधनपुर, भीलड़ी, पालनपुर, आबू रोड, अजमेर, जयपुर, बांदीकुई, भरतपुर, इडगाह आगरा, टूंडला, इटावा, गोविंदपुरी, प्रयागराज, मिर्जापुर, पंडित दीन दयाल उपाध्याय, बक्सर, आरा, पटना, किउल, अभयपुर, जमालपुर, सुल्तानगंज, भागलपुर, कहलगांव, साहिबगंज, बड़हरवा और न्यू फरक्का स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में एसी 2-टियर, एसी 3-टियर, स्लीपर एवं सामान्य श्रेणी के कोच रहेंगे।

ट्रेन संख्या 09463 गांधीधाम – मालदा टाउन समर स्पेशल के लिए बुकिंग दिनांक 14 अप्रैल 2026 से सभी PRS काउंटर्स एवं IRCTC वेबसाईट पर उपलब्ध होगी।

ट्रेनों के समय, ठहराव एवं अन्य जानकारी के लिए www.enquiry.indianrail.gov.in का अवलोकन करें।

पूर्वोत्तर रेलवे के गोरखपुर स्टेशन पर ब्लॉक,के कारण पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेनें प्रभावित

पूर्वोत्तर रेलवे के गोरखपुर स्टेशन पर फुट ओवर ब्रिज के निर्माण कार्य के कारण पश्चिम रेलवे की कुछ ट्रेनें प्रभावित होंगी।

पश्चिम रेलवे के जनसम्पर्क विभाग द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, प्रभावित ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार हैः

शॉर्ट टर्मिनेट/ओरिजिनेट होने वाली ट्रेनें:

1. 04 मई, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 09091 बांद्रा टर्मिनस – गोरखपुर एक्सप्रेस गोरखपुर कैंट स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी। अतः यह ट्रेन गोरखपुर कैंट और गोरखपुर स्टेशन के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।
2. 05 मई, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 09092 गोरखपुर – बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस गोरखपुर कैंट स्टेशन से ओरिजिनेट होगी। अतः यह ट्रेन गोरखपुर और गोरखपुर कैंट स्टेशन के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।
3. 30 अप्रैल तथा 01, 02, 03, 05, 06, 07 और 08 मई, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19489 अहमदाबाद – गोरखपुर एक्सप्रेस गोरखपुर कैंट स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी। अतः यह ट्रेन गोरखपुर कैंट और गोरखपुर स्टेशन के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।
4. 01, 02, 03, 04, 06, 07, 08 और 09 मई, 2026 को यात्रा प्रारंभ करने वाली ट्रेन संख्या 19490 गोरखपुर – अहमदाबाद एक्सप्रेस गोरखपुर कैंट स्टेशन से ओरिजिनेट होगी। अतः यह ट्रेन गोरखपुर और गोरखपुर कैंट स्टेशन के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।

राजकोट में एम्स के पहले दीक्षांत समारोह में राष्ट्रपति का संदेश- तकनीक के साथ मानवीय संवेदना ही चिकित्सा की असली पहचान

राजकोट। देश के उभरते चिकित्सा संस्थानों में शुमार AIIMS Rajkot के पहले दीक्षांत समारोह में सोमवार को द्रौपदी मुर्मु ने शिरकत करते हुए भावी डॉक्टरों को एक संतुलित और मानवीय दृष्टिकोण अपनाने का संदेश दिया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान जितनी तेजी से तकनीकी रूप से आगे बढ़ रहा है, उतना ही जरूरी है कि डॉक्टर अपने भीतर मानवीय संवेदनाओं को भी जीवित रखें। राष्ट्रपति ने कहा कि देशभर में स्थापित एम्स संस्थान आज किफायती लागत पर विश्वस्तरीय तृतीयक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ये संस्थान केवल इलाज तक सीमित नहीं हैं, बल्कि चिकित्सा शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार के केंद्र के रूप में भी उभर रहे हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सार्वजनिक स्वास्थ्य नीतियों के निर्माण और समाज के व्यापक हित में भी इन संस्थानों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अपने संबोधन में उन्होंने AIIMS Rajkot को एक उभरते हुए संस्थान के रूप में रेखांकित करते हुए कहा कि इसके सामने चिकित्सा शिक्षा, शोध और सेवा के क्षेत्र में लंबा सफर तय करना है। उन्होंने संस्थान के नीति-निर्माताओं से अपील की कि वे अपने लक्ष्यों में न केवल एम्स के मूल उद्देश्यों को शामिल करें, बल्कि क्षेत्र विशेष की स्वास्थ्य चुनौतियों के समाधान पर भी ध्यान केंद्रित करें। उनका कहना था कि किसी भी संस्थान की नींव यदि पारदर्शिता और सुशासन पर आधारित

हो, तो उसका विकास दीर्घकालिक और प्रभावी होता है।

राष्ट्रपति मुर्मु ने चिकित्सा पेशे को केवल एक करियर नहीं, बल्कि मानवता की सेवा का माध्यम बताया। उन्होंने कहा कि डॉक्टरों का सफेद कोट उस विश्वास का प्रतीक है, जो मरीज कठिन समय में उनके प्रति रखते हैं। ऐसे में इस विश्वास को बनाए रखना हर चिकित्सक की नैतिक जिम्मेदारी है। उन्होंने छात्रों से कहा कि वे अपने ज्ञान और कौशल के साथ-साथ संवेदनशीलता, धैर्य और विनम्रता जैसे गुणों को भी अपने व्यक्तित्व का हिस्सा बनाएं।

तकनीकी प्रगति पर चर्चा करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, रोबोटिक्स, प्रिसीजन मेडिसिन और डिजिटल हेल्थ जैसी नई तकनीकें चिकित्सा क्षेत्र को तेजी से बदल रही हैं। उन्होंने छात्रों को इन परिवर्तनों के साथ खुद को ढालने की सलाह दी, ताकि वे बेहतर और प्रभावी स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान कर सकें। हालांकि, उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि तकनीक कितनी भी उन्नत क्यों न हो जाए, वह मानवीय संवेदनाओं का स्थान कभी नहीं ले सकती।

उन्होंने कहा कि एक अच्छा डॉक्टर बनना निश्चित रूप से बड़ी उपलब्धि है, लेकिन एक ऐसा डॉक्टर बनना जो ईमानदारी, करुणा और सेवा भावना से परिपूर्ण हो, उससे भी बड़ी उपलब्धि है। ऐसे चिकित्सक न केवल मरीजों का इलाज करते हैं, बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव भी लाते हैं। उन्होंने स्नातक छात्रों से आह्वान किया कि वे राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाएं और अपने ज्ञान का उपयोग समाज के कल्याण के लिए करें।

राष्ट्रपति ने वर्ष 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य का उल्लेख करते हुए कहा कि इस दिशा में नागरिकों का बेहतर स्वास्थ्य अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच और गुणवत्ता को सुधारने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं, जिनके सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं। उन्होंने विश्वास जताया कि जब सभी हितधारक मिलकर कार्य करेंगे, तो इन प्रयासों को और गति मिलेगी।

अपने संबोधन के अंत में राष्ट्रपति ने भरोसा जताया कि AIIMS Rajkot आने वाले समय में न केवल चिकित्सा शिक्षा और अनुसंधान में नए मानक स्थापित करेगा, बल्कि देश में समान और सुलभ स्वास्थ्य सेवाओं के लक्ष्य को हासिल करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। समारोह में मौजूद छात्रों, शिक्षकों और गणमान्य व्यक्तियों के लिए यह अवसर प्रेरणा और जिम्मेदारी दोनों का संदेश लेकर आया।

टिकट चेकिंग में उत्कृष्ट प्रदर्शनः भावनगर मंडल के 5 कर्मचारियों को डीआरएम ने किया सम्मानित

पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल में बिना टिकट एवं अनियमित यात्रा पर प्रभावी रोक लगाने के उद्देश्य से नियमित रूप से विशेष टिकट जांच अभियान चलाए जाते हैं। इसी क्रम में वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान टिकट चेकिंग में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 5 टिकट चेकिंग स्टाफ को दिनांक 13 अप्रैल, 2026 (सोमवार) को मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा द्वारा योग्यता प्रमाण-पत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री ऋत्विक शर्मा एवं मंडल के सभी शाखा अधिकारी उपस्थित रहे।

वित्तीय वर्ष 2025-26 में कर्मचारियों का चयन उनके व्यक्तिगत लक्ष्यों से अधिक अर्जित जुर्माना राशि एवं दर्ज मामलों के आधार पर निर्धारित मानकों एवं मानदंडों के अनुरूप किया गया। इस सम्मान से कर्मचारियों का मनोबल

बढ़ा है तथा उन्हें भविष्य में और बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरणा मिलेगी।

सम्मानित होने वाले टिकट चेकिंग स्टाफ में श्री एम. डी. मकवाणा (मुख्य वाणिज्य लिपिक – गोंडल), श्री राहुल शर्मा (सीसीटीसी – वेरावल), श्री पी. आर. त्रिपाठी (सीसीटीसी – बोटाद), श्री अशोक मुरानी (वाणिज्य अधीक्षक – जूनागढ़) एवं श्री आर. एन. गोहिल (उप मुख्य टिकट निरीक्षक – भावनगर) शामिल हैं।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के मार्गदर्शन में मंडल द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान बिना टिकट एवं अनियमित यात्रा करने वाले यात्रियों के विरुद्ध व्यापक एवं सघन जांच अभियान चलाया गया। निरंतर निगरानी एवं विशेष चेकिंग अभियानों के परिणामस्वरूप मंडल ने टिकट चेकिंग के माध्यम से 105928 मामलों से 7.15 करोड़ का रिकॉर्ड राजस्व अर्जित किया, जो कि पिछले वित्तीय वर्ष के 73597 मामलों से 4.81 करोड़ की तुलना में 48.8 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि दर्शाता है।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने सम्मानित सभी कर्मचारियों को बधाई देते हुए उनके समर्पण एवं उत्कृष्ट कार्य की सराहना की। उन्होंने यात्रियों से अपील की कि वे उचित टिकट लेकर यात्रा करें तथा रेलवे नियमों का पालन कर सुरक्षित एवं सम्मानजनक यात्रा सुनिश्चित करें।

सूरत नगर निगम चुनाव में कांग्रेस उम्मीदवार भूपेंद्र पटेल का फॉर्म रद्द होने से पार्टी में संदेह और बहस तेज हो गई है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। सूरत नगर निगम चुनाव में वार्ड संख्या 12 से कांग्रेस उम्मीदवार भूपेंद्र पटेल की उम्मीदवारी नामांकन पत्र में अधूरी जानकारी के कारण चुनाव अधिकारी ने रद्द कर दी है। भूपेंद्र पटेल ने कांग्रेस पार्टी में वाल्मीकि समाज के उम्मीदवार के रूप में नामांकन दाखिल किया था। वे इससे पहले दो बार चुनाव लड़ चुके हैं। दुर्भाग्य से, दोनों बार कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में उन्हें हार का सामना करना पड़ा। वर्तमान वार्ड में कांग्रेस मतदाताओं की अधिक संख्या के कारण उनकी जीत की संभावना अच्छी थी। वार्ड संख्या 12, नानावत, सैयदपुरा, कुबेरनगर और महिधरपुरा क्षेत्रों में अल्पसंख्यक और अनुसूचित जाति के मतदाताओं की अच्छी खासी संख्या है। मतदाताओं की संख्या को ध्यान में रखते हुए कांग्रेस पार्टी ने भूपेंद्र पटेल को उम्मीदवार के रूप में चुना था।

प्रत्येक उम्मीदवार को भरने के लिए चार नामांकन फॉर्म दिए जाते हैं। उम्मीदवार स्वयं और उसका डमी उम्मीदवार उसके समर्थन में उम्मीदवार उतारते हैं। और किसी भी कारण से फॉर्म रद्द होने पर, उसका डमी उम्मीदवार स्वतः ही उम्मीदवार बन जाता है। भूपेंद्र पटेल के डमी उम्मीदवार को मैदान में न उतारने को लेकर कांग्रेस पार्टी में संदेह है। तीसरी बार चुनाव लड़ रहा व्यक्ति उम्मीदवार की पार्टी का नाम लिखना कैसे भूल सकता है? भूपेंद्र पटेल का फॉर्म रद्द होने पर कांग्रेस पार्टी के चुनाव प्रबंधन के प्रभारी नेताओं पर भी संदेह पैदा होता है। भूपेंद्र पटेल का फॉर्म रद्द होने से पार्टी नेताओं की विफलता साबित हो जाती है।

वाल्मीकि समुदाय से कांग्रेस पार्टी के केवल एक उम्मीदवार का फॉर्म रद्द होने से समुदाय में तीखी बहस छिड़ गई है। भाजपा की एक महिला उम्मीदवार का फॉर्म, जिसमें नाम और उपनाम बदला गया था, अन्य उम्मीदवारों की आपत्तियों के बावजूद स्वीकृत हो गया है। वहीं भूपेंद्र पटेल का फॉर्म तकनीकी खामियों के बावजूद रद्द कर दिया गया है। कुछ कार्यकर्ताओं के अनुसार, यह फॉर्म भाजपा के साथ मिलीभगत से रद्द किया गया है। जब फॉर्म कांग्रेस पार्टी के जनादेश के साथ भरा गया था, तो पार्टी के नाम पर आपत्ति उठाकर फॉर्म रद्द करना किसी अन्य पार्टी का पक्ष लेने के समान है। यह चर्चा हो रही है कि भूपेंद्र पटेल की उम्मीदवारी रद्द होने से अन्य पार्टियों के उम्मीदवारों पर भी असर पड़ेगा। इस घटना से यह बात पूरी तरह स्पष्ट हो जाती है कि कांग्रेस के कुछ "विस्फोटित कारतूसों" ने भाजपा का परोक्ष रूप से समर्थन करके निस्संदेह अपनी गर्दनें सीधी कर ली हैं।

पश्चिम रेलवे - रतलाम मण्डल

ई-निविदा सूचना

निम्न कार्य के लिए मण्डल रेल प्रबंधक (संकेत एवं दूरसंचार) पश्चिम रेल्वे रतलाम द्वारा भारत के राष्ट्रपति की ओर से व उनके लिए ई-निविदाएं आमंत्रित की जाती है। **निविदा संख्या: SnT_RTM_26_06_SIGNAL दिनांक: 10.04.2026 कार्य का नाम:** 10000 से अधिक एटीवीयू वाले एलसी गेटों के इंटरलॉकिंग के संबंध में सिग्नलिंग सामग्री की आपूर्ति, स्थापना, परीक्षण और कमीशनिंग | (3 नग)। **कार्य की अनुमानित लागत: ₹1,82,29,884.14 बयाना राशि: 3,64,600.00 निविदा बंद करने का समय एवं दिनांक:** दिनांक 05/05/2026 समय 15.00 बजे तक | **निविदा खुलने का समय एवं दिनांक:** 05/005/2026 समय 15.30 बजे के बाद । **कार्य पूरा करने की अवधि:** 12 माह **निविदा अनुभाग कार्यालय प्रभारी और बोली खोलने का स्थान:** सीनियर डीएसटीई रतलाम, डीआरएम कार्यालय रतलाम मध्य प्रदेश. निविदा सिर्फ अनलाइन E-निविदा पोर्टल **www.ireps.gov.in** पर देखा व जमा किया जा सकता है। V/538

हमें लाईक करें:: facebook.com/WesternRly

सूरत में केसर के नाम पर अवैध व्यापार, अंधविश्वास और धमकियों को लेकर गंभीर सवाल उठ रहे हैं

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। आज भारत में भगवा वस्त्र पहनने वालों को बदनाम क्यों किया जा रहा है? यह एक विचारणीय प्रश्न है, लेकिन इसका सीधा सा अर्थ यह है कि यदि आप निर्दोष लोगों, विशेषकर महिलाओं को अपने विश्वास में लेना चाहते हैं, तो भगवा वस्त्र ही आपका एकमात्र हथियार है। "धर्म" के नाम पर, भगवा वस्त्र पहनना, गले में दो-चार मालाएँ पहनना, लंबे बाल और लंबी राख लगाना और तिलक-तप करना, इससे आप पूजा के योग्य बन जाते हैं और फिर आप पर अंधविश्वास थोपा जाता है और उस अंधविश्वास की मदद से आपको अत्याचार करने की छूट मिल जाती है? और ऐसे ही एक भगवा वस्त्रधारी साधु ने 20-25 साल पहले सूरत के दिंडोली इलाके के तहखाने में एक आश्रम बनाया था। सब लोग उस बाबा को खदेश्वर बाबा के नाम से जानते थे। वह खदेश्वर बाबा 24 घंटे खड़े रहते थे। और इसके लिए वे अपने तहखाने वाले आश्रम में एक दीवार से दूसरी दीवार तक एक लंबी रस्सी बाँधकर 24 घंटे खड़े रहते थे। वह एक तरफ झूला टांगते, अपना आधा पैर झूले पर रखते, घुटने मोड़ते और एक पैर जमीन पर रखते। इसीलिए उन्हें खदेश्वर बाबा के नाम से जाना जाता था।

उसके पास एक खुली जीप थी, जिसके चारों ओर दो कोनों पर एक लंबा खंभा लगा हुआ था और उस पर एक झूला रखा था, जिस पर बाबा खड़े होते थे। यह खदेश्वर भगवा वस्त्र पहनते थे, इसलिए लोग उन्हें साधु कहते थे, लेकिन असल में वे साधु के वेश में एक शैतान से कम नहीं थे। ये खदेश्वर बाबा किस तरह का धंधा करते थे? उनके पास एक रिवॉल्वर थी। अरे! साधु बाबा को हथियारों की क्या ज़रूरत है? फिर भी, भगवा वस्त्र पहने, साधु के वेश में छिपे इस शैतान को, जो रिवॉल्वर लिए घूमता था, भातर रोड के एक जाने-माने संगमरमर व्यापारी ने गोली मार दी, जो जादव मार्बल के नाम से कारोबार करता था। इस भगवा वस्त्रधारी खदेश्वर ने जादव मार्बल के मालिक तेजपाल वर्मा पर सीधा निशाना साधा था। लेकिन सौभाग्य से, तेजपाल वर्मा बाल-बाल बच गए। गोली चलाने का कारण यह था कि तेजपाल वर्मा जमीन विवाद के एक मामले में खदेश्वर बाबा से सहमत नहीं थे, इसलिए खदेश्वर ने रिवॉल्वर से गोली चलाकर तेजपाल को चुप कराने की कोशिश की। जो पूरी तरह से विफल रहा।

इस तरह, खदेश्वर भगवा वस्त्र पहनकर ऐसे काम करते थे कि शैतान भी शर्म से लाल हो जाए। वे मुख्य रूप से अपने तहखाने जैसे आश्रम का इस्तेमाल भूमि विवाद सुलझाने के लिए करते थे और अगर कोई विरोधी समझौता करने से हिचकिचाता, तो वे उसके सामने रखी रिवाल्वर दिखाकर समझौता करने की धमकी देते थे। वे किसी भी तरह समझौता करवाकर मोटी रकम वसूलते थे। और अगर बात बिगड़ती, तो वे गोली भी चला देते थे। आज भी

सूरत शहर और जिले के अमरोली, मोराटेकरा, ओलपाड रोड, जहांगीरपुरा, कामरेज, उधना मेन रोड आदि कई इलाकों में ऐसे कई आश्रम चल रहे हैं, जहां बड़े-बड़े पुलिस अधिकारी, बिल्डर, राजनेता, व्यापारी और आम लोग भी भगवा वस्त्र पहनने वालों के अंधविश्वास में फंसकर खुद को और अपने परिवार को बर्बाद करने की कगार पर पहुंच चुके हैं।

सवाल यह है कि अगर आप सचमुच सनातन धर्म के अनुयायी हैं और सच्चे धर्म का पालन करते हैं, तो आपको साधु का वेश धारण करने, गले में माला पहनने, बड़ी दाढ़ी रखने और इस तरह के दिखावे की क्या ज़रूरत है? यह खुलेआम सनातन धर्म का अपमान है। यह धर्म को बदनाम करना है। अगर आप भगवा वस्त्र पहनते हैं और आपको भौतिक सुख-सुविधाओं और धन-दौलत जैसे एसी कार, एसी कमरे, आलीशान आश्रम चाहिए, तो भगवा वस्त्र उतारकर व्यापारी या आम आदमी बन जाइए। आप ऐसा भी नहीं करते। आप बस भगवा वस्त्र पहनते हैं और गलत काम करते हैं। आप महिलाओं का यौन शोषण करना चाहते हैं और विकृत यौन सुख भोगते हैं। फिर, भगवा वस्त्र पहनने वाले आप जैसे लोगों की तुलना में, डाकू

कई अच्छे या खुलेआम गलत काम करते हैं। इसके साथ ही, वे महिलाओं का समान सम्मान भी करते हैं। लेकिन वे धर्म को बदनाम नहीं करते। अंत में, आज भी कई उद्योगपति, राजनेता, माफिया ऐसे भगवा वस्त्रधारी लोगों के आश्रमों में ज़मीन के मामले लेकर जाते हैं और मामला सुलझाते हैं। और जब भगवा वस्त्रधारी लोगों के आश्रमों की अलमारियाँ इतनी सारी फाइलों से भरी पड़ी हैं, तो हमें आश्चर्य होता है कि क्या ऐसा शिक्षित, सम्मानित वर्ग पाँच व्यापारियों के साथ बैठकर या समाज के बड़े नेताओं को इकट्ठा करके इस मुद्दे को सुलझा सकता है? या फिर अदालत या पुलिस जैसी कानूनी कार्यवाही करने वाली संस्थाओं के बजाय, जब वे भगवा वस्त्रधारी लोगों के आश्रमों में जाते हैं, तो क्या अदालत कार्यालय को बंद करके भगवा वस्त्रधारी लोगों की शरण में जाना चाहिए? या फिर

ऐसी जगह जाना चाहिए जहाँ केवल "धर्म" के नाम पर धमकियाँ, अपहरण, बलात्कार और हत्या की बातें हो रही हों? अब जनता के सोचने का समय आ गया है।

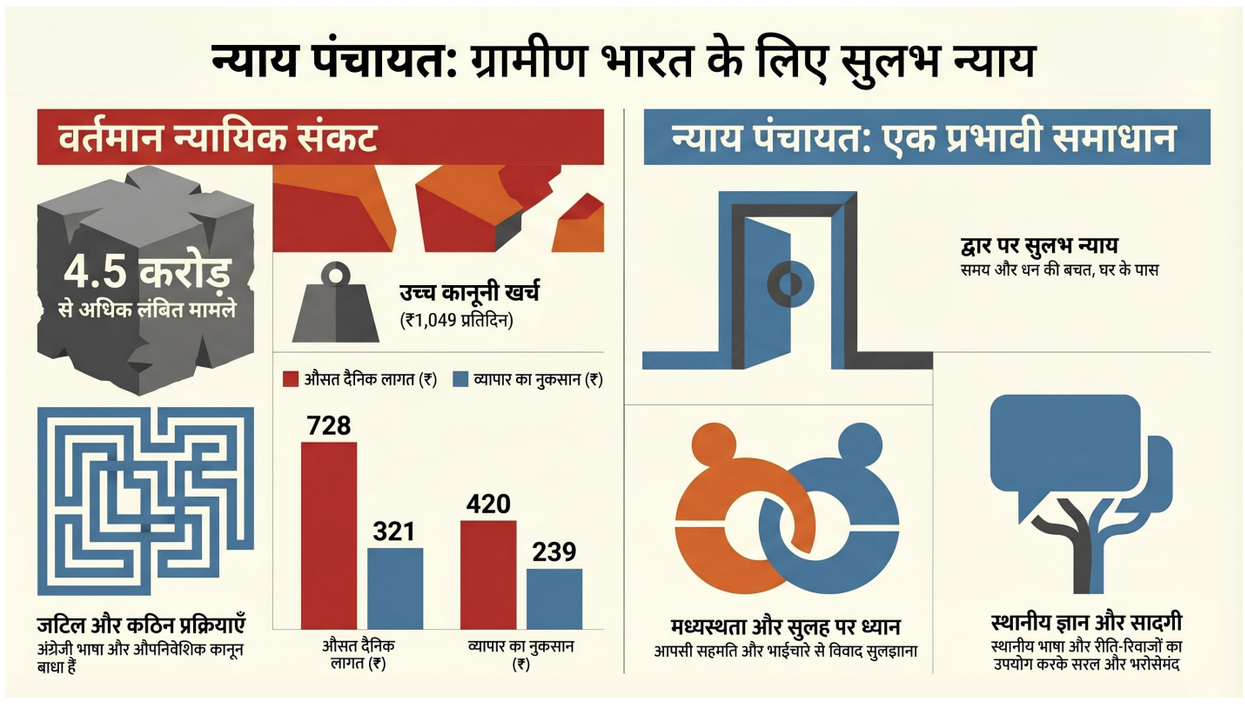

नामांकन जांच में 'तकनीकी चूक' से मचा सियासी घमासान, सूरत कलेक्ट्रेट बना रणभूमि; कांग्रेस उम्मीदवार का फॉर्म खारिज, कार्यकर्ताओं में भिड़ंत

सूरत। सूरत म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन (SMC) के आगामी चुनावों के लिए नामांकन पत्रों की जांच के दौरान सोमवार को कलेक्ट्रेट परिसर में अभूतपूर्व हंगामा देखने को मिला। जहां एक ओर प्रशासन शांतिपूर्ण तरीके से प्रक्रिया पूरी कराने में जुटा था, वहीं अचानक राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच टकराव ने पूरे माहौल को तनावपूर्ण बना दिया। देखते ही देखते यह विवाद इतना बढ़ गया कि कलेक्ट्रेट परिसर कुछ समय के लिए सियासी अखाड़े में तब्दील हो गया।

पूरा विवाद उस समय भड़क उठा जब वार्ड नंबर 12 से कांग्रेस के वरिष्ठ उम्मीदवार भूपेंद्र पटेल का नामांकन पत्र तकनीकी त्रुटि के चलते खारिज कर दिया गया। जानकारी के मुताबिक, उन्होंने नामांकन फॉर्म भरते समय अपनी पार्टी Indian National Congress का नाम दर्ज नहीं किया, जिसके कारण निर्वाचन अधिकारियों ने नियमों के तहत उनका फॉर्म अमान्य घोषित कर दिया। यह चूक इतनी गंभीर मानी गई कि राजनीतिक गलियारों में इसकी तुलना पहले हुए विवादित मामलों से की जाने लगी।

इस फैसले के बाद कांग्रेस कार्यकर्ताओं में जबरदस्त नाराजगी देखने को मिली। उनका आरोप था कि इतनी छोटी तकनीकी गलती के आधार पर वरिष्ठ उम्मीदवार का नामांकन खारिज करना लोकतांत्रिक प्रक्रिया के साथ अन्याय है। हालांकि अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि नियमों के अनुसार फॉर्म में आवश्यक विवरण का सही-सही भरना अनिवार्य है और इसमें किसी प्रकार की ढील नहीं दी जा सकती।

इसी बीच, भारतीय जनता पार्टी (BJP) के बागी नेता नरेंद्र चौधरी का नामांकन भी तकनीकी कारणों से रद्द कर दिया गया, जिससे उनके समर्थक भी आक्रोशित हो उठे। हालात तब और बिगड़ गए जब Bharatiya Janata Party, Aam Aadmi Party और कांग्रेस के कार्यकर्ता आमने-सामने आ गए। कलेक्ट्रेट परिसर में नारेबाजी, आरोप-प्रत्यारोप और तीखी बहस ने देखते ही देखते उग्र रूप ले लिया।

स्थिति ने तब गंभीर मोड़ ले लिया जब कार्यकर्ताओं के बीच धक्का-मुक्की शुरू हो गई। कुछ लोगों ने विरोध जताने के लिए एक-दूसरे को जबरन पार्टी के सैश और प्रतीक पहनाने की कोशिश की, जबकि कुछ ने इन्हें जमीन पर फेंककर पैरों तले रौंद दिया। इस दौरान माहौल इतना गर्म हो गया कि किसी भी समय बड़ी झड़प की आशंका बनने लगी। हालात बेकाबू होते देख मौके पर मौजूद पुलिस बल को हस्तक्षेप करना पड़ा। पुलिस ने किसी तरह भीड़ को नियंत्रित किया और कार्यकर्ताओं को अलग-अलग कर स्थिति को संभाला। इसके बाद कलेक्ट्रेट परिसर में अतिरिक्त पुलिस बल तैनात कर दिया गया, ताकि आगे कोई अप्रिय घटना न हो सके।

इस पूरे घटनाक्रम ने सूरत की सियासत में नई हलचल पैदा कर दी है। नामांकन प्रक्रिया जैसी संवेदनशील और महत्वपूर्ण प्रक्रिया के दौरान हुई इस तरह की चूक और उसके बाद का हंगामा चुनावी माहौल को और अधिक गरमा रहा है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इस घटना का असर आने वाले चुनावों पर भी पड़ सकता है, क्योंकि इससे मतदाताओं के बीच भी चर्चा और प्रतिक्रियाएं तेज हो गई हैं।

एक निर्णय जिसने सात जिंदगियों में फिर से रोशनी भर दी, सूरत के अशोकभाई डोंडा बने मानवता की मिसाल

सूरत। जीवन और मृत्यु के बीच की उस पतली रेखा पर खड़े होकर लिया गया एक निर्णय कभी-कभी इतिहास बन जाता है। सूरत के मोटा वराछा स्थित आवकार रेजीडेंसी निवासी 55 वर्षीय अशोकभाई नानूभाई डोंडा की कहानी ऐसी ही एक असाधारण मानवीय संवेदना की मिसाल बनकर सामने आई है, जिसने यह सिद्ध कर दिया कि इंसान का जीवन केवल उसके जीने तक सीमित नहीं होता, बल्कि उसके जाने के बाद भी वह कई जिंदगियों में धड़कता रह सकता है।

10 अप्रैल 2026 का दिन अशोकभाई और उनके परिवार के लिए सामान्य रूप से शुरू हुआ था। वे अपनी पत्नी रेखाबेन के इलाज के सिलसिले में अहमदाबाद गए थे और दोपहर बाद सूरत लौटे। घर पहुंचने के कुछ ही समय बाद अचानक उनकी तबीयत बिगड़ गई। एक स्वस्थ दिखने वाले व्यक्ति का यूं अचानक गिर जाना पूरे परिवार के लिए किसी सदमे से कम नहीं था। घबराए परिजन उन्हें तुरंत P. P. Savani Hospital लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टरों ने उन्हें बचाने के लिए हरसंभव प्रयास किए।

घंटों चले इलाज और चिकित्सकीय प्रयासों के बाद जब डॉक्टरों ने उन्हें 'ब्रेन डेड' घोषित किया, तो परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। यह वह क्षण था जब उम्मीद लगभग समाप्त हो चुकी थी, लेकिन इसी अंधकार में एक ऐसी रोशनी की संभावना छिपी थी, जो कई जिंदगियों को उजाला दे सकती थी।

इसी दौरान Jivandeep Organ Donation Foundation Trust के प्रतिनिधि अस्पताल पहुंचे और उन्होंने परिवार को अंगदान के महत्व के बारे में विस्तार से समझाया। आमतौर पर ऐसे संवेदनशील समय में कोई भी परिवार इस तरह का निर्णय लेने में हिचकिचाता है, क्योंकि भावनात्मक पीड़ा अपने चरम पर होती है। लेकिन अशोकभाई के परिवार ने असाधारण साहस और संवेदनशीलता का परिचय देते हुए समाज के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

परिवार ने यह सोचकर अंगदान की अनुमति दी कि यदि अशोकभाई का शरीर अब उनके लिए उपयोगी नहीं रहा, तो क्यों न यह किसी और के लिए जीवन का आधार बन जाए। यही वह क्षण था जब एक व्यक्ति की जीवन-यात्रा समाप्त होकर सात अन्य जीवन-यात्राओं की शुरुआत बन गई।

इसके बाद पूरे सिस्टम ने तेजी से काम करना शुरू किया। State Organ and Tissue Transplant Organization (SOTO) की टीम के साथ समन्वय स्थापित किया गया और विशेषज्ञ डॉक्टरों ने अत्यंत सावधानीपूर्वक अंगों को सुरक्षित निकाला। हर अंग की समय सीमा और संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए यह प्रक्रिया अत्यंत सटीकता और गति के साथ पूरी की गई।

अशोकभाई का हृदय U. N. Mehta Hospital में एक गंभीर मरीज को नया जीवन देने के लिए प्रत्यारोपित किया गया। फेफड़े KD Hospital में ट्रांसप्लांट किए गए, जहां एक अन्य मरीज को सांसों का नया सहारा मिला। उनका लीवर और दोनों किडनी IKDRC Hospital में सफलतापूर्वक प्रत्यारोपित किए गए, जिससे तीन अलग-अलग मरीजों को जीवनदान मिला।

इसके अलावा, उनकी आंखें Lokdrishti Eye Bank को दान की गईं, जिससे दो लोगों की अंधेरी दुनिया में रोशनी लौट सकेगी। इस तरह कुल सात लोगों को नया जीवन मिला—किसी को धड़कता दिल, किसी को सांसें, किसी को नया शरीर और किसी को रोशनी।

इस पूरी प्रक्रिया का सबसे चुनौतीपूर्ण हिस्सा था अंगों को समय पर अलग-अलग अस्पतालों तक पहुंचाना। इसके लिए गुजरात पुलिस ने अभूतपूर्व तत्परता दिखाते हुए तीन 'ग्रीन कॉरिडोर' तैयार किए। ट्रैफिक को नियंत्रित कर सूरत से अहमदाबाद तक का रास्ता पूरी तरह खाली कराया गया, जिससे एम्बुलेंस बिना किसी रुकावट के तेजी से अपने गंतव्य तक पहुंच सकीं। इस कार्य में एयरपोर्ट अथॉरिटी, ट्रैफिक पुलिस और चिकित्सा टीमों ने मिलकर एक उत्कृष्ट समन्वय का उदाहरण प्रस्तुत किया।

Jivandeep Organ Donation Foundation Trust और P. P. Savani Hospital के संयुक्त प्रयासों से यह 32वां सफल अंगदान बना। यह आंकड़ा केवल एक संख्या नहीं, बल्कि उन अनगिनत प्रयासों और भावनाओं का प्रतीक है, जो हर अंगदान के पीछे छिपी होती हैं।

अशोकभाई डोंडा का यह योगदान केवल चिकित्सा क्षेत्र की उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह समाज के लिए एक गहरा संदेश है। यह हमें यह सिखाता है कि जीवन का वास्तविक अर्थ केवल अपने लिए जीना नहीं, बल्कि दूसरों के लिए कुछ कर जाना भी है।

आज जब उनका परिवार अपने प्रियजन के वियोग का दुख झेल रहा है, उसी समय सात अन्य परिवारों में खुशी की नई किरण जगी है। यह विरोधाभास ही जीवन का सबसे बड़ा सत्य है—एक अंत, कई नई शुरुआतों का कारण बन सकता है।

अहमदाबाद मंडल को मिली पहली अमृत भारत एक्सप्रेस की सौगात,अहमदाबाद से पटना के बीच संचालित होगी ट्रेन सेवा

भारतीय रेल द्वारा यात्रियों को बेहतर, किफायती एवं सुविधाजनक रेल सेवा प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए अहमदाबाद–पटना के बीच चल रही विशेष ट्रेन को नियमित कर 21905/21906 अहमदाबाद–पटना अमृत भारत एक्सप्रेस के रूप में संचालित करने का निर्णय लिया गया है। यह ट्रेन अहमदाबाद से चलने वाली पहली अमृत भारत एक्सप्रेस होगी, जो गुजरात और बिहार के बीच रेल संपर्क को और अधिक सुदृढ़ बनाएगी।

इस ट्रेन का नियमितीकरण यात्रियों की बढ़ती मांग को ध्यान में रखते हुए किया गया है। यह निर्णय विभिन्न जोनों के मध्य बेहतर समन्वय स्थापित कर लंबी दूरी की यात्रा को अधिक सुगम, सुव्यवस्थित एवं विश्वसनीय बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

ट्रेन संख्या 21905 अहमदाबाद–पटना अमृत भारत एक्सप्रेस प्रत्येक बुधवार को शाम 18:30 बजे अहमदाबाद से प्रस्थान कर शुक्रवार को 00:30 बजे पटना पहुंचेगी। इसी प्रकार ट्रेन संख्या 21906 पटना–अहमदाबाद अमृत भारत एक्सप्रेस प्रत्येक शुक्रवार को 22:30 बजे पटना से प्रस्थान कर रविवार को प्रातः 05:25 बजे अहमदाबाद पहुंचेगी। यह सेवा साप्ताहिक आधार पर संचालित की जाएगी, जिससे यात्रियों को नियमित एवं विश्वसनीय रेल सुविधा प्राप्त होगी।

इस ट्रेन सेवा को शीघ्र ही सुविधाजनक तिथि से लागू किया जाएगा तथा आवश्यकता पड़ने पर प्रारंभिक रूप से विशेष सेवा के रूप में भी संचालित किया जा सकता है।

मार्ग में दोनों दिशाओं में यह ट्रेन आणंद, छायापुरी, गोधरा, दाहोद, रतलाम, भवानी मंडी, रामगंज मंडी, कोटा, सवाई माधोपुर, गंगापुर सिटी, हिण्डौन सिटी, बयाना, ईदगाह आगरा, टूंडला, गोविंदपुरी, सुबेदारगंज और दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन जैसे प्रमुख स्टेशनों पर रुकेगी जिससे व्यापक क्षेत्रीय कनेक्टिविटी सुनिश्चित होगी।

अमृत भारत एक्सप्रेस आधुनिक रेक एवं उन्नत सुविधाओं से सुसज्जित होगी, जो आम यात्रियों के लिए किफायती एवं आरामदायक यात्रा अनुभव प्रदान करेगी। यह सेवा लंबी दूरी की यात्रा के लिए बेहतर कनेक्टिविटी, सुरक्षित एवं सुगम यात्रा सुनिश्चित करने में सहायक सिद्ध होगी।

यात्रियों के लिए प्रमुख लाभ:

- गुजरात–बिहार के बीच सीधी एवं सुविधाजनक कनेक्टिविटी
- कम लागत में लंबी दूरी की यात्रा का बेहतर विकल्प
- समयबद्ध एवं नियमित सेवा से यात्रा की बेहतर योजना
- मार्ग के प्रमुख शहरों को जोड़ने से क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा
- व्यापार, रोजगार एवं सामाजिक आवागमन में वृद्धि
- यह नई सेवा न केवल यात्रियों की बढ़ती मांग को पूरा करेगी, बल्कि पश्चिम एवं पूर्व भारत के बीच सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को भी और मजबूत बनाएगी, जो भारतीय रेल की यात्री-केंद्रित एवं प्रगतिशील सोच का परिचायक है।

क्रूड ऑयल वायदा में 589 रुपये का ऊछाल: सोना वायदा 1186 रुपये और चांदी वायदा 5492 रुपये लुढ़का

मुंबई: देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 155224.38 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 20369.25 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 134855.13 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 3096.63 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 12046.11 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना जून वायदा 151547 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 152144 रुपये और नीचे में 151255 रुपये पर पहुंचकर, 152652 रुपये के पिछले बंद के सामने 1186 रुपये या 0.78 फीसदी गिरकर 151466 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर पहुंचा। गोल्ड-गिनी अप्रैल वायदा 796 रुपये या 0.65 फीसदी घटकर 121106 रुपये प्रति 8 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-पेटल अप्रैल वायदा 107 रुपये या 0.7 फीसदी घटकर 15172 रुपये प्रति 1 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। सोना-मिनी मई वायदा 150054 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 150700 रुपये और नीचे में 149733 रुपये पर पहुंचकर, 1183 रुपये या 0.78 फीसदी घटकर 150032 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-टेन अप्रैल वायदा प्रति 10 ग्राम 150540 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 151099 रुपये और नीचे में 150058 रुपये पर पहुंचकर, 151540 रुपये के पिछले बंद के सामने 1113 रुपये या 0.73 फीसदी घटकर 150427 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

चांदी के वायदाओं में चांदी मई वायदा 238362 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 239600 रुपये और नीचे में 237190 रुपये पर पहुंचकर, 243274 रुपये के पिछले बंद के सामने 5492 रुपये या 2.26 फीसदी गिरकर 237782 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा चांदी-मिनी अप्रैल वायदा 5389 रुपये या 2.2 फीसदी गिरकर 239711 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि चांदी-माइक्रो अप्रैल वायदा 5294 रुपये या 2.16 फीसदी की गिरावट के साथ 239799 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। मेटल वर्ग में 2899.08 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा अप्रैल वायदा 6.45 रुपये या 0.53 फीसदी बढ़कर 1216.6 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि जस्ता अप्रैल वायदा 2.6 रुपये या 0.79 फीसदी की मजबूती के साथ 333.6 रुपये प्रति किलो बोला गया। इसके सामने एल्यूमीनियम अप्रैल वायदा 7.95 रुपये या 2.22 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 365.65 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा अप्रैल वायदा 95 पैसे या 0.49 फीसदी बढ़कर 194.55 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कमोडिटी वायदाओं में 20369.25 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 134855.13 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर : सोना-चांदी के वायदाओं में 12046.11 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 5329.27 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल अप्रैल वायदा 9454 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 9850 रुपये और नीचे में 9454 रुपये पर पहुंचकर, 589 रुपये या 6.44 फीसदी बढ़कर 9742 रुपये प्रति बैरल के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी अप्रैल वायदा 587 रुपये या 6.42 फीसदी की तेजी के संग 9737 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा नैचुरल गैस अप्रैल वायदा 252 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 255.9 रुपये और नीचे में 250.2 रुपये पर पहुंचकर, 248.7 रुपये के पिछले बंद के सामने 6.7 रुपये या 2.69 फीसदी की तेजी के संग 255.4 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर पहुंचा। जबकि नैचुरल गैस-मिनी अप्रैल वायदा 6.7 रुपये या 2.69 फीसदी बढ़कर 255.4 रुपये प्रति एमएमबीटीयू के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल अप्रैल वायदा सत्र के आरंभ में 1011.5 रुपये के भाव पर खूलकर, 2.6 रुपये या 0.26 फीसदी लुढ़ककर 984 रुपये प्रति किलो बोला गया।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 7805.76 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 4240.35 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 1791.08 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 763.54 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 9.94 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 311.37 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 3986.33 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1309.66 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। मेंथा ऑयल के वायदा में 4.70 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। जबकि कॉटन के वायदाओं में 1.06 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 8888 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 54301 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 27043 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 378884 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 57454 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 7268 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 21213 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 83632 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 17488 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 45621 लोट के स्तर पर था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल अप्रैल 10000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 138 रुपये की बढ़त के साथ 336.8 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस अप्रैल 250 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 2.9 रुपये की बढ़त के साथ 12.45 रुपये हुआ।

सोना अप्रैल 160000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 329 रुपये की गिरावट के साथ 1055 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी अप्रैल 300000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 111 रुपये की गिरावट के साथ 450 रुपये हुआ। तांबा अप्रैल 1300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 2.41 रुपये की बढ़त के साथ 6.32 रुपये हुआ। जस्ता अप्रैल 335 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 48 पैसे की नरमी के साथ 4.05 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल अप्रैल 9000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 247.5 रुपये की गिरावट के साथ 141.5 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस अप्रैल 250 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 3.85 रुपये की गिरावट के साथ 7.1 रुपये हुआ। सोना अप्रैल 140000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 190.5 रुपये की बढ़त के साथ 967 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी अप्रैल 200000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 264 रुपये की बढ़त के साथ 1189.5 रुपये हुआ। तांबा अप्रैल 1200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 98 पैसे की नरमी के साथ 16.91 रुपये हुआ। जस्ता अप्रैल 320 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 29 पैसे के सुधार के साथ 1.2 रुपये हुआ।